

रियम क्रम्य क्रम्य स्मिन्न निवादी हु स्मिन्न विद्या क्रम्य क्रम क्रम्य क्रम्य

भाभाग्यभभभभभक्षभिनंज्ञच भाभाग्यभभभभक्षभिनंज्ञच वियम्वने॥ इत्जान्। पदंग्रक्त भाभादेक अभियमी द्वित्वकेश व्यम्भवित्वभिन्द्रम्थलंक

क्ताल्या कम्य मीयुक वार्यान

न भनचा भन भंचे इंब लवड़े डे रमन्त्रिंडि कराः। राग्य डिराग्न निवाभे य वकी राग यमुवराः भरुयम् मवक्रु ५३ र न्तवार यस्वयभागि धर्दे इरिश्य भूवररागभ इः प्रमः। **জিখ**ৰা त्र्यभाषित्यारगीणन्थः, मेहन्धमुभ महरासून। क्रिल्)। भभित्रमुभिष्न।। ब्रेगभगवनि उत्यं वचयद्धाभगवभा । स्विशियसक्त्र भा। ग्या विम्ने अस्ति । ग्या विम्ने अस्ति । भवभाग्य हिन्द्र में से अस्ति अस्ति । भवभाग्य हिन्द्र भ्रित । भवभाग्य हिन्द्र भ्रित । यद्भाल्यमाहाल्यद्भन्यपृत लग्रह्णम नेक्थ्रश्रेष्ट्रविष्ठरे

त्र इक्ट्राभययमभ् रिकन्त्र भेर भेर मुख्य भेर भेर विविद्वन्यर्इभन्भवन्त्राभि क्रियं कि देखाः वि नभः॥ आरुयनभः सम्वाणन्य भरम्य विसम्ब यभेडानभेष्ट्र वार्गियाभेड्रिय भ्रहिश्चाड्म नुम्म रुवा। येभा भनः भग्यभाद्र हो हो अउ विरभनेनयम् ते धलीयभुद्भे दे उष्टम्परे म्भव्व भिजनभू भू भू ए भच्यु वर्षाम्य द्र क्यं प्य ५ि धात्रा विषः भिरद्या भिर्म पिरः विष्णपिर ने कपिर च उरपंडिश णा

परिनिष्ठमुनुक्रविभाइरा भू निष्द्वान कः लिस्ट्रस्म मर्थ्य प्रस्य मना नियः भीरजंभडंगबन्दरंगिरिशप्ष मी हा गवड़ा यार मी: के भी डि। कि हा वर्ष की यूस है भी भ अउवाद्यायः सः नुरुवभ्गित मुद्द भूक म म् (उभागम्कभृष्टाः स्मी पभ्रिती विधरंडभेह्मा नगमारिक्क्र याः ह्राम्या व्यान्त्राम्य न्या अम्याभ उपप्रभा याभियुके भनी नाभा । । विश्वभ गीत्राञ्चभा जग्रावस्थाद उर्वेष्ठिपद्गिर्भेड जगिर्दि

भरनभ्रम्हणज्ञभृतः भ्रविग्रुष्ठ रुगवर्भग्दी भृष्टि भिन्न श्रुक कण्यानिक्रलेन्द्रस्मानेन्छ भक्षत्रं प्राट प्राट प्राटक्षतीहै गर्वकृत्यनेद्रिया । अक्टिस्स् हिल्ल भन्दें हिन्दें भुगरेग्ड भृणिक भुष्यः श्रीउये वेश्वनम्। द्विष्य उरागरीमारमभाशाष्ट्रभेष्ट्रवे जिवश्भिवश्भित्र अपस्थित्य

3

मरीरंगेरंग क्ष्यां<sup>3</sup> कें**्रायाम्मधभ्नद्भा**र

उत्या कि उ निष्णिम भेतु उ गुले हम बाह प्रभ प्रदर्श द उ प्रमुक्त भेष द जिला प्रभाव का मुल्य के जिला हुआ:

री समय जिन्द्र वली भ

युविनः। परिमीलयु॥ आनि

नत्रुकगवउभवाभु किभने ने राज निष्निष्ठ । अभर्भः

पित्र गव उ मुवेण नभ

जिर्भेषभागित कषािकः भून जीनः

नक्रकषः हिरषान्यक मिन

मदले कि विश्विष्ठ

मुर्ग भूप न न उपन् न भाग के क

ग्धनप्द इडि नान ५करण अभिकान में करा हुउया नि

## वेरविश्वभगगुष्वगुष्ठः॥

भाभर्ते विमिष उद्यासमाणनं ठिक्किं निरुपिष्टिन् हार्स भाभर्ति विरामन भूतराशिष्ठ से स्थिति और वास्तुभी। च भूषद्वाठिक्कि भाषित्रीकाका इराष्ट्र भने मंभाभिति।।

भवे पं भा परे एक एउड़ कि दन्तु विभित्ति राष्ट्रिय यः वेदारण।। सुदेश्हा भूरि दानुर सम्भूभीयाउन भूमें वृष्णविष्ठिकियोगः, भूगिरिगारुशार्गनयरुगुनेग वकाइहगरा गुरुनगयम् देउक्मा। अ

यम्पीद करणनभानामक मविश्वहिंग हिंग्हें इंच विक दि शिंदि ।
इन्ते स्थान स्

भिरू र येद्र शिविशिष्ट्र के शिक्ष के श

भयाभुरा। वाभुरेवेडगविडिज्

यंडे वाभव्यक्र मुंचे कवि अवः मृद्ध विभ्रष्ट क्र वर्ण विश्वकः वाह्य भूभाराची। हा। भूभाराचे भूगार्थ विश्वकः या वाह्य भूभाराची। हा। भूभाराचे भूगार्थ व्यक्ष भूगार्थ व्यक्ष भूगार्थ व्यक्ष भूगार्थ

उपाहिद्यु उपरीत्मा नगण्य

म्भप्णनः स्वर्त्वरानि स्कः स्वर्ति । स्वर्ति

वकाभवाभिक्कभग्रक्षराजीः डी

ब्लडिंग्निन्हरेगाउभुक्षपंत्राणा

भगवरा वाभूरवपगभाषाः॥

3

वाश्राह्मभावाश्राह्मभावाश्राह्मभावाभ्राहमभावाभ्राह्मभावाभ्य गर्डेग् डि: पवता कि: राभुद्र रागगि । अ। अ। असमा यभारी ने में के के इ ( भवित्र भाषिती कि के ? रम्बर्गायभाषिश्चिग्राधिः। क्थनेड्डिंभुकः॥भूजन्भव याय इ इ इ इ स स श्री आ श्री म्यान इति इति प्रमालिशि अववाही । अववाही । उति विज्ञानिमन् भनि

भिष्ठक्त अङ्ग ज्यामा अभिष्ठ प्रमान प्रमान क्षेत्र क्ष

इंग्या कथिल हैं वेभग्रेश्वरित इक्ष्यण इक्ष्यकर्न हैं वर्ग्य गुल्हिं क्ष्यकर्न हैं वर्ग्य गुल्हिं क्ष्यकर्न

मन मुंचे वे म श्रीका ज्ञा निकार ( चिका अने भी तु दिः क्रिया । अपने म तु दिः क्रिया । अपने म तु दिः विका अपने भी तु दि स्वा अपने स्व क्रिया । अपने मित्र क्रिय । अपने मित्र क्रिया । अपने

मिनिभिङ्ग निश्च भा भा वगवडी ठिङ्गिग्डर ए ज्या । जिस् भा हिन्द्र स्था निगा सिभाने निगा मिनिश्च

भू ठक्रेनग्रीयस् किपनम्ब वमनेः पंगिष्ठः ग्राक्य हि।

नकार लाइने कार्य प्राप्त कार्य कार्य

र्यभेराहिरङभक्षीद्धाः

उभक्ति इ

## चेर्रेरेड जगरा प्रमहाभड़ाण

मृत लकी हुन किन भन्य नि॥

नन्द्रिम् ध भक्षरणन न किसुईराज पर्नीि।।

यत्रिभभभग्यधाला। अ। यष्ट्रित

र भेम शिराचरभ्रभ्रवर्गम्

ल नगरानाहिन्दि पालि

वरप्राविभावेत्यं भाविष्ट्रिश्वा माव्यावायाया

वित्र प्रशिवन्ता भद्य भित्र द्वा भ इत्या क्ष्मा अक्षेत्र वित्र प्रमाने क्ष्मा क्ष्मा

स्मियो कथिल देवेभग्रेभ्रि॥

उद्याल इपिक्षणकर्न

द्भवारंगु लिंगारा भारत्य विक

मनम्बे वेद्र प्रश्नि ज्वुज्ञ निकद्याल विश्वं । १८३५० कृष्ण । भाष्ठ्या विक्रभन्न भाष्ठिः व्हं मुद्दं न्याइ भिज्ञः विश्वं

भनेयस्य स्राधिकी उपगा अस्ति। अस्ति।

न भिक्षिण ग्रम है विक्ष वेव श्र विकी व डि रूच विषये विवा

यद्रभिष्ठ्व विक्रिक्ष भाक्षाव की कि कि विद्रार निक्ष भाक्षाव की कि कि विद्रार निक्ष भाक्षाव की कि कि विद्रार निक्ष भाक्षाव की कि कि कि विद्रार निक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि विक्र में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्ष में कि विक्रिक्स में कि विक्रिक्ष में कि विक्र में कि

र पुभक्तमिगोत्तभन्नग्रह म

क्ष्य के सम्बद्ध विश्व के प्रमाण्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

वक्षान्त्र कार्यम् भए दण्डिकियान

रुप्येव किरा भक्ती द्वारा

त्रभित्र द ये हे हैं उठ गवर प्रभ्या भराभराभराग नन्द्रिम् ध भक्तरान मृव लकी हुन किन भन्य हि॥ न किस्ड्रिंग्ड पष्ट्रजीडि।। यत्रेभभयोग्रधा (आ) आयष्ट्रित उ अह शिरा वर्भ प्रभवत्र भी किंग के किंग की किंग किंग की किंग क ल नेग्रन निष्ठित निरुप लि

वरप्राविभक्त स्मान्धिता भक्त स्मान्धिता यो वर्षिता स्मान्धित स्मान्धिता

वेत्र प्रश्विम भद्ग भविष्ठ वाप्त भविष्ठ वाप्

भिवानवाण 5ज्ञु'वय भाविशरंक इंडिभभभा चित्रकृषे प्रदे A Cala अधेडि मिक्टिनिस्डिन्न्रिकिडिक्रिम्मिर्डिमी नववड

किलिशायभाष्ट्रिय उद्ग

मेदविभयः विश्वामार्थितः भूद्रार्थितं विश्व

लवंद्रजंबित्रमें कु उठ के हिम्लाभ न खें हु दि उद्देश उद्देश द एशनक उपन भगाउ नम्हण कि विने अर्गम्य प्रतिक विशेष वेपम्बगुरुशाविषद्यनिक न्ड्रं सभाभवं विस्तुर भाषभाष मानुन्द्याहना इत्राहर मुडिया विशि रया। जानः हर्भद्रगत्रः भूगं ग्रंथ न्यमध्युग्या। युद्धः भचकुग नं रुचंडी नुं निवरुडे॥०।।भद्य

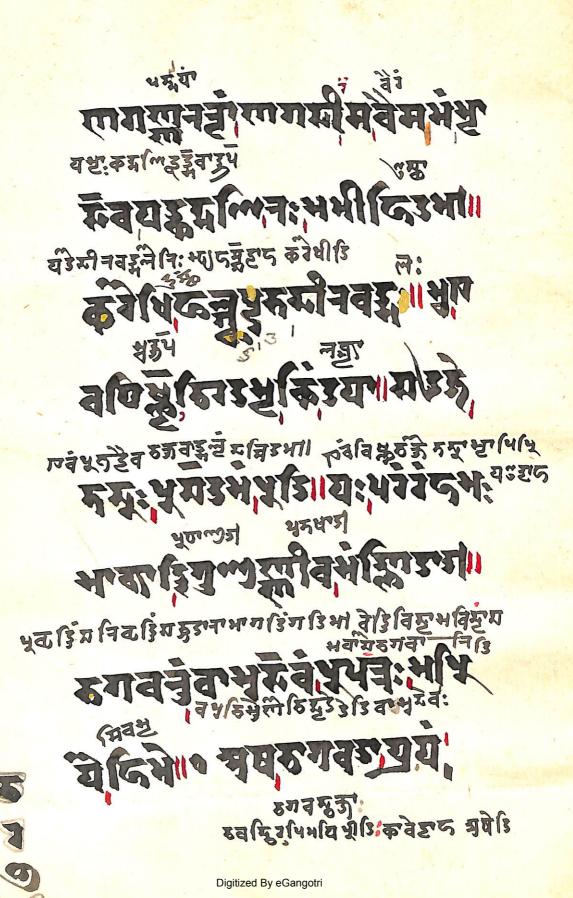
इं डिकंडेये अर्भुपडिभद्याती॥

भक्षणाद्वास्त्रम्भक्रुग्वि

भक्षाजा। ००।इन्द्र अच्छते । ३५० म

यण्डित हरानीयपाद्वा राज्या राज्या १००० विश्वमेव द्व प्रतिक्षा प्राप्त हिन्द्व प्रतिक्षा १००० विश्वमेव द्व प्रतिक्षा प्राप्त हिन्द्व प्रतिक्षा प्राप्त हिन्द्व प्रतिक्षा प्राप्त हिन्द्व प्राप्त हिन्द्व प्राप्त हिन्द्व प्राप्त प्राप्त हिन्द्व प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त हिन्द्व प्राप्त प्राप प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त

डमबैइनेन्स किंद्र प्रवेद्र मह पूर्य यादि न ज्ञामिति।। ग्रेडरः भक्षभन्यन्यन् । पि द्वितंत्रभुगयाभिक्यनायभ गुरेद्रभुग्द्र विश्वम्य मिणेड्र रंगविष्यभागवाम् किष् वन उमेन क्षेनजी हरा उभकन धेर धमानिहेन भेने उभरा दिहा प्र अमध्रमगुन्गनग् भक्तरत्न गकिभिपरें भ्रमचीः मर्ड्डिनाधः लभशाच्यावयाक्षपाउभागिः किनार्याद्वार्यकार्यश वस्त्र मादिसक्ति स्टिंडिडनः



# धियाः अहगरा हुए। नभन्न गरा

# नंगप्यान्हेशिकदिमिग्। अभ

भू कार व्यानेन निक्य शिक्षा। भवे पंश्रां पंतेल्य इहने ने के भवे भाषा मं रुगवेद म्हण के विष्ट प्रस्ति के स्वी भाषा मं रुगवेद महिष्ट के प्रस् उद्गाद शिक्षेष्य स्विष्ट उद्गिष्ठ स्वी

र्या। जिस्क् क्र उभार्य थुक् डिरी श्रुशाथस्त्रभ थुक्त द्वारा

यश्रिष्ठित्रिरगवर्डियन्भ नविष्ण किंडिनुल्: वश्रिष्ठ हिन्दः वेनुल भुर्भभाभारभुग्। जग्न

ग्रहां भज्ञ । भूद्रं नं क्रिक्न क्रिक

अन्य यहा स्वितं देव देन विनास्त्रीवन स्वत्री भागमं यहा स्तितं देव देन विनास्त्रीवन स्वत्री भागभी भिवासी भी भित्रे। दिस्

भजनुग्राम्भू । जहन्यभग्राभुग्राम्भाशा

उद्यवसम्बद्धम्हग्रम्बन्द्वहरणनीयः नइत् द्रेवद्ययः भगवाग्निक्षः नद्गी वाद्यागाह्यानेत्र्यः द्रित्वह भवे भड़ितिह । इत्रित्वि ।

Digitized By eGangotri

भभनुतः पाडिहण्डरेगानभा।
भणवंद्धं रगवानेवगानः
भागवंद्धं रगवानेवगानः
भागवानेवानेविष्ठणनेवां भविह्यं भूति ।
यहगवानेवा स्रम्

राष्ट्रवयभाभकाने ५िडा।

र्नायः भेषुउद्धाभीमुग्भा हता इराभेभुत्रसहिद्धाः

हज्जुनयद्गरम्बभ्रहरहिरवनीलच्च

वेजल

### ननयडुभनान्द्रिवभा॥ शान्या

उद्गद्भानमेनम्। भ्रानुन म्हण्या न सम्बद्धाः

म्बनिभद्धेन्महग्रान्तर

उभन्धः

AB: CAROL SICHARD

विश्वाका शिष्ठे हुआ ।।।।

उद्यानम्प वनगरा

मनगडीउनमा है उन्तर की गणा गुराहि।

१॥॥॥ भारत्में हैं बर्गे।

विश्वार तुर वाक्तभा। विश्वार तुर वाक्तभा। भट्टिस्ट कि उभू कि उस्ता नेता

भगभार्यः

यद्गान्त्रं यद्गान्यः अये विण्डेहरणः निक्षभनं अव्हाम्प्रं यः हे पिक्षभेने वेडि भनिक्कां पुष्ठि पिणने निरम्प्राप्त्रभञ्जा नम्कृपिकारं भर्णने पियानं यर् वभा ० भभूभपञ्जास्य क्षा भट्टेन्डमण्डः किंड उसमे देख्य किष्णे विषयेहण्य गन्भा उद्गाप्त्रमेन भूगवद्ग जिन्नभ्राप्तभभूकि स्कार्यहणियुद्ध यहमादि भिन्ना हिन्दे माह्य हैं दुर्ग होते । यह सम्भित्र कर्णे हिन्दे प्राप्ति स्वार्थ क्ष्णे हिन्दे प्राप्ति स्वार्थ क्षणे हिन्दे प्राप्ति स्वार्थ क्ष्णे हिन्दे प्राप्ति स्वार्थ क्षणे हिन्दे प्राप्ति स्वार्थ हिन्दे हिन्द

यं अध्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

किः भष्ट्रमदः भच्छे ५१३ ॥

लवंस्विपर्ह्य ब्यानंत्रेहि प्रवंशनंहण्ड नगण्लिहि।

नग्राण परः भचन जडम्रनिक्रिः उत्तयक्रां भूजा भवजनरके भूषिक्र नग्रुक्तिनः

थस्विद्धीं गर्गे के वडा नं वडा भी निग्रंका अध्य अभिष्ठा स्विध्य उडे परिभ्रत्वका भेसे नेवला के

न्यत्रभूमानुभा विनेधभद्धपरिक सनः प्रकृतन्त्रशिक्षप्रदेशिक्ष

षष्ठभद्रमेव बाह्यभा

वाभू के विकास दिक जिल्ला के निवास के न

म्यः ॰ भभ्मभ्द्राद्धवाद्यभा

गरः शरेहरः नम्पष्ट्रं भारतः श्रीताभिष्ठिष

ग्रिक्शनभा स्वर्भे स्वर्ये स्वर्भे स्वर्थे स्वर्थे स्वर्थे स्वर्थे स्वर्थे स्वर्भे स्वर्ये स्वर्थे स्वर्ये स्वयं स्वय

संभारं जिश्वाह उसुवाश्वाह जिच्याभा

साउँ प्रभेत्र भन्म विद्याचित्रमचणी

उभाधियमङ्गिष श्रीमज्ञे वार्षा है विकार स्थान वार्षा है के वार्षा है कि वार्षा है क

दश्चरमण वैविज्य भारितः

विस्नवार्णिया

श्रुत्य षा है उपनीय भाना वागीम

उत्भाष्ट्रा भूष्ट्रा अ विषया वि उपा दिषय वा भना या वन रा भिंड उव का गृह भना श्व व श्व वीक स्वीय स्थान विश्व विसः भुज्य उः गंबान वि

पश्चिभमजानुज्ञ उ वामाधिमारं वसु ब्रानिद्धि केभागमगढ् भाष्ट्रयागं किभाग्युमरेहाँ द्व भन्रष्टरणम्निन णक्षावानिक युन्नकेभान्ध भेग्रस्भ पाना उरा अस्वभू मुम्भा भी लया वज्जा वर्ष भूग प्रस्तः निर्मिधनइग्र अर्क्ष इन्हार ने भिन्न का जिल भचरः ५ केरिप्रणभेश्वरकंन क्षान्यभने मुद्धारिष्ठम् वर्षः

Digitized By eGangotri

मुकमवस्तुभानभू

3

सुशुद्धनः भाषुग्रमधारिकनंभा विध्यालेशकगरिभाणगणहाइविश्वहै है निविधापाँ श्रामेशः भाष्ट्राः कि विधिय प्रभागनः विध्वने मिव्यामिकेश्व गयडि गयः कनाई प्रमानः भुग्रम् येग

SPECIAL SESSEE ASSESSEE

HAMEN PROPERTIE

जभकी जाजूरके सकुउधः बल्डझ्रम्भाइष्ट् बिधभूज्यीनंबा भन्ते क्रभाषा लड्डाराष्ट्रधः प्रमानः जनविभूत्रधित्वध्यस्याः पर्निष्टभूतिकभूत्रधेणन्मव

व मुबर्भवरणिंडभाहि

नम्यू प्रवेग्द्रम्थ्यालनः भन्डं दवर्गिष्म् इस् निभिन संबाद एहाड लब मिडि।। पनर्भ्रुण र मर्गिनेकार्

प्रदिश्चित्र वर्षे

रुविद्युग मुभी वृषिश्च वार्ष

मयानिमनाः उभामग्रिय

मुरुष्यां भरेत्र के वसंहणा उभाम्हणवरु हुङ्गिवरं मी कणवा में वहणा व वसण्या है य

गुर्मनव्य ७ उपाप्यु मुक् इंडेर

यम्जीनः

भाष्ट्राच्यास्यास्याः हला

एम् डिंग हेगा विसुया गनीय गुरूप नभू नी दंदिभी मु

नार्रेवभ्भिरेहानाभुदाकं बुद्धानिहारे मीठगवम्हरा क निरा गभा ० गुलि द्विराई फेवई भी

य एडिमेडी मीडरावसुणनिककितियभाराबादिहाड श्रष्टा तनि भिडि ॥

धिइं वाभगद्भारः भी लागणभूज मुडि भ्राह्मज ग्रध्नबर्द्रनग्रहणुग नम्पनन न्यू मीन उपन्यूनम्यन्यः निम श्युर सम्मि नएन:भाइ निस्डभय भन्यण्डहुप्रिश्चित्रभूनभा भन्गा कर्णन मुग्दे प्राप्त के स्ट्रिंग कि स्ट्रिंग कि स्ट्रिंग के ए दियमे पृष्ट भूराप रा भुगाः भुरुव वन्य प्रभवृत्त नश्कायगः येगः नःरापनायिकवनिप

गवडः २५५भडड्राउ४४ठगढाङ्गराय्य उज्जण्दरी<sup>नाय</sup> जलङ्ग्य ॥

### पय इंडिंग्डमविडहिंजनः

#### रानवाः एँद्रेपष्ट्रेनभच३भच३उ

ह वः ० ग्रमम्यकवाङ्गा

1

यमिद्धारम् नात्रम् भित्रभ्रभिति भ्रह्म हार्ग्य विकितिय भारक्ष्म नात्र विकित्र महित्र भित्र हार्ग्य मुग्न भारक्ष भारक्ष विकित्र महित्र भारक्ष होत्र भारक्ष हित्र भारक हित्र भार

भगाः माञ्चापिम् भंक्षः ज पयाभी द्वात्वत् । ग्रवंभक्ति

उछ्ग्रजिन । अवस्य अवस्य

निश्चित्रप्रदेश भारति । निश्चित्रप्रदेश किन्नक्षेत्र हो निश्चित्र । निश्चित्रप्रदेश किन्नम् । स्था प्रभाग्यनिकि । मुखा प्रभाग्यनिकि । स्था प्रभाग्यनिक । स्था प्रभाग्यनिकि । स्था प्रभाग्

पशिभुजिरां ३ नःयंभाग

यमिष्णभर्:

भग्भिज म सम्भविज्ञ भिरिः क्षितिरं भर्भ भाषा भेनेवड थं भङ्गाः भूगी नठ किंवि राष्ट्रात्रभूभि भिष्कि दिश्य ने विद्या शिष्ठ राष्ट्रात्रभूभि भिष्कि दिश्य ने विद्या स्थापि ।

क्रियुविक वन तेणलाइ ये नणहा जनभूभाना मन वेविष्ण क्रियुविक क्रियुव

भूरे जड़ भन्न ज वे जियोग सुरू

#### <sub>क्रिया</sub> पिरेट्यान्यकमन्तुया विव

## युष्टिं वर्क षे भनी उचा भूषि किरे

नवाष्ट्रभा क्रियुउउगार्ड पराभा उस्वबर्टी क्रियाग्यालकारलभर्भर् भूभा डिमर्य क बंहण इं विषयं भन्न इक्षिक नम्बेमप्रेशः कारमा। स्विदेशम्य भिष्र्यबय्युन्ह्मा ० ग्लन्ड्र इपेन्धरापश्चण्यभ्यमः॥

भाष्ठिः

म्येहिचिविपेश्च हैं। ह अविजिहे ठक्काभिद्धार्याकि इद्वाराण्युष्ठार ने दिवातः भाष्ट्र ० जाभाभियवेन सरी जिंह गरंग रुडिद्यभागेने ग्येहल मी हगवम नुग्देल विदिश ठित्रिवक्यानिश्य सेभाउडि ॥ द्धः याग्युष्ठाः वहात्रायभगभगद्भित्र अन्धः भि मक्रावः अरः क्रवः नज्ञी युरेन्दरगारे वि म्बन्ध प्रमुख् पिभावा ख्रुवभने ह्या द्वारा ग्राइ व विस्वित करा हरा है उर्देश हरा विश्वास उए कि अभिक्ष ग्रेड भयुजः १ नःयम्यद्गरानिरः निवनि मभाभा र इ: भूभागः सद्धिकानिनगञ्ज कारीनं क्ष्या राभे इत्युक्तायपु

गुनिद्धि उ ग्रेडिक कुल जुर्मियं येड स सुभंग्यक्षिभीनंष्ठ्यं भभेष लग्यक्ष्टिश्वर सुभाभिति। याद्वराद्वावीनं सुभाभद्रा वलर्गाम्य भर्म् श्रेव स्वरं रिकीकी किभ्भिगुन्मन्रिधणीन भा नेथः । इड्रभानं भाने यान्युराग्युराग्यभाइ पर्वमान्त्रि डेरायुज्य प्रस्तीस् विश

याभा राम भरारस्य वास्त्रभा निरुपण्टः नयभूनग्रहः मयन निरुपण्टः भ्रथनिरुप्त म्यान्त्रस्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य स्थानित्रभाद्र विश्व विश्व स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र विश्व स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्र स्थानित्रभाद्र स्थानित्र परंदु हलाई प्रभार स्वाधा उद्दाप हर्ज धूम बर्च गुपदन प्रभार डिंग विषद्येर उत्त यथा कलाई: स्मारिस्टिश मैंबके चुन दलनकई स्वेशिडिस

चुरूनः भभग सः भ्रभाणः नुद्रुद्रः

कल्प उरेः

संस्वजंभुराउरिवाउभुभागः स

**ज**नं

वः नगुभभ्रयेन विभद्ये १

भग्रभनः । एक्यम्बद्धान्तन भग्रभनः । एक्यम्बद्धानन स्थापनेत्र कथ्रि यविकगवरभेज

व नज्ञमार्च्विनानस्तिन नम्डेन विन्रुभर इस्टिन ध्रुक्ति विभक्तद्वाद्विन विनेद्रि ॥

निभी व्यवत्रम्भणद्भवि इस्ट्रिभ निभी नवं नभा क्षत्रम्भ स्थित अर्डि अर्डि उठे ने इंति भू लि भी की दिउं एके निकनः कर्ण म्हाभृतः भूकी दिः।। उपगः इन्द्रमन्त्रुये मुद्रः भूभ भविष्ठभं विद्युष्ठ गवर हिरम मिन्द्रिक विष्युप्त विष्युप्त हो। यान क्षणन्य ग्राम्य पुभाष्ट्र क दिकिन एवित्रभी नव नेर नभून अर्थ नन्केरे रुगवर्ष्य रेस्रुग दिश्विक अक्यनवाराभनेभे विभः कि इक्षण्यात्र कर्यने विक्रित्र भेने वहरेषियम् झाभियञ्चादिषियम्भियागं यहपर्शमिक मीठगवस्तिर 3 हर्षांद्विशी भिष्टा यूड्डः र्द्वत्य भरद्वलभा ॥

चिषि अभयव देश

यग्रिनिवमाः भाषीमाम् द्रिनिवमाः भाषीमाम् इन्भाष्ट्रभाष्ट्

विकास अपना विकास किया है जाता है। जा का का का का का

वन वंद्रेड क्रिक्न के स्थाप के क्रिक्न के क

मरम्प्रह्मिक्क्ष्णयंग परम्प्रत्य परम्प्रिविक्रम्भा ॥ क्रभ

क्रव नागयां भाउ

उद्गीरिहः द्राः इंभवरं भरतर विवेद्या थाः व्यवहार मार्कान भूता है । भूता है । मुह्य ने राज भक्विन उपरभव्याउपम् उरे पर्वि अभि विभे इम्मवभाग्य वर्षः भिरम्म दीना। स्थान्य वर्षः भिरम्भ दीना। स्थान्य वर्षः भिरम्भ दीना। स्थान्य वर्षः स्थान्य ब्राजः यऽ बड्रभरइभ्रिक्यिकिवभूमें स्भिवंग ाक्यम ग्रभवाङ्ग भागगुरुनभगर है: भन्भष्ट मु

भः भद ग्रहारेगा छिरेवलागु निविधारयः थिया । यार्था ग्रवंठज्ञ नाभिविभाद्र प्रिम्ह्र ठङ्ग नाभी जगादिभाद स्वार्थ के क्षेत्र क्षेत्र प्रिम्हित दियः सङ्ग्री हें विष्टः सङ्ग्री हैं विष्टे स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्यः स्वार्थः स्वर्यः स

यर्', क्ष्मारं भाग विक्रितिक एः भीट्रेड स्वरूप में भाग विक्रितिक एउटि स्वरूप में प्राप्त के प्राप्

उत्रयः १ मी सक बक्रभा विमिध्यस्कारिका एवक्रम्म उद्दर्ध भेर्राष्ट्र भरेकिनयुग्रेप्यस्ययस्थि

विनिर्दे वाभूमविधाभराभ्या

म्नभेमयः एक कमियाना

उक्त्वभ्द भ्रुष्ठ भंभावित । भंभावज्ञाप्य दिव्यविधियेश्विष्ठित्रण

क्रम्भर्ग लीवं क्यवंडे भरः भभरतः गुभक्तमादिन्द्रानं के नृभुराभिदेश्वरः

8

वन विधयाली कृत्वयम् इष्टेष्ट्रिक विकास माने द्वार प्राप्त स्व किया स्व स्व किया स्व

राष्ट्रभाने पिक्षम् जी विषय गणि है

मिलिड सियि भग्डम भग्डन कि भनः भग्डम ए डिक्बः॥

चियः भ्रायः भ्रान्ह्र प्रास्तु विध

चेत्राविष्ठचर एक्यमभुज्ञे

विद्यप्तिः भेष्ठनुः भुक्तरं विद्यप्ति ।

डगवडः अभकः सुद्दाम् भवम् रंसुरस्

भारतग्वनुभूग्वारगभा

मीडगवानुस्वेष्रि ॥

उभा क्रिजेव हमवर् भूभाय एडा हर्ने डि मही जिलाव्या हर्ने प्रमान क्रिकेट त्रुरं अंचेर्ड्यूयंत्रक्कालभेष भ्रञ्जान इसनः याउभः यहात्रः भूभभिङ्ग्राहिः करेडेणंभिरुमभाडा उष्टाभि धयार जिनस्वेनं भिष्यस्मः न्माकशाउ भ्यान भारतीय कः। व मीकीडि म् उपून नश्रुण्यभू प यांने यद्या कि जिमिनिय

भक्षत्रदणाम्ह उर्धाभवभवनहःस्रष्टाः वर्डि।।

थियः भरं ठिजिः भ्रतारिभविष्ठ

स्याकान्य भिभक्षकान्य म् एकः भारतम्बद्धान्य स्थान्य स

भड़त्र परभाराने मुभुर् प्रना प्रभगरिकः प्रभगरिक्ष क्रियके सु मर्बनेक प्रना निगं शिक्त प्रस्तिन ने स्वित्र ने मर्विक प्रना स्त्रय इत्रय

वरामरभाविन विनावसभूक

नयस्य हिन्दु विनामयः व भम्हि युज्ञसुभव्निक भनागीहाद वागिति॥ घेश्रुमकिश्च विन्य उद्गणित्र रहे सम्बद्ध

वनेभूनारि यहायिक दिभमने

उप्पेरं पूरानमादिना

रगप्राडियाउभवःश्रहरगडशुड

वाभनं कम् नमेउर्घभुगं। प अर्गमक्षात्रमयवित्रय निङ्ह

म्याय वह त्राह्मः मृद्धिरा भक्षभहं वृक्ता । इर एरि भक्षकि येगानकरण्डेष्ठभाभा भाज यसाचिनिह ।

श्रामभाद्वभयः मी सुर्भ भार

वरभेकं व लिए। भलका भारे केवरः वहाराजा उगवड्ड उभेकि जिड्ड भिन

विश्व हिय ० उड़ानं वाडाभी
विशिवः॥ उमाङ्गा विज्ञानं महाराजनं क्षेत्र जिल्ला विश्व भारत् विश्व वि

रिगर्भयार्वितिश्वमा इभव ह उर्विहा

त्रेष्ट्रमचयाउँ गुजीयंबुद्धारगवत्रं

भूति स्राणां जानकर जी स्यानवर्षे

नन्ड विभन्न किभिडि ठगवस्त जिमेवन ज्विति उद्यमें विभया

उङ्ग धिविधयभाप निवेगभी रुष्ट नर्ने डि।

निः मयानानाभनिग्धियाता विक् अक्षरभगभाक्षेत्रमः

लड्यानिकः स्वाद्यान्य । वह्यम्थ्यम्य ।

अन्यिथिकवयुषा हुभङ्ग विभाग मंग विभाग

उपमेश्वीत् ब्यास्त्रीयवाद्धी

यहित्र'भिम्मिनेन्त्राडिभ्भन्न' एक्मिन्ड अंग्रेडि स्वन्यद्विषयभन्नणद्वभू

न गणनं क ग वेड विड स्व भू भू भे भे

विभुग्य । किरावि**रहणं उवेभाय**णं इ नन्मवंहर्निवनभगन्नियुँ उषाभग्नां किन्नुवृहि।

मी बुद्धालयगा विज्ञ ध्याः भेद्धालयगुर्वेद्ध उग्रहियगञ्जा

ग्धिष्वरद्ययेगभण्यः ग्रेभंवि ण्या उभने हम वास्युणे म भूराभ क्रीयविभागनिक्यानिक्रमः

महज्ञीवमुख्याञ्चा यम

यशुन्गङ्गिङ्गाङ्ग् । भन्भक्षवः खुर हैं

विडः भरणकाडिभडिनेकै वैदेरा गवंदगवयन्य प्रमुपभनं हुन्न किमने दर्गायय जन्म क्रिक्ष प्रमुपभनं हुन्न किमने दर्गायय जन्म क्रिक्ष प्रमुपभनं हुन्न किमने दर्गायय

स्र्यंक्षतः भङ्गीह्रेनिष्यं गरगहेन स्रोस्वेद्धन स्वाद्यक्षणाः अनुमाने स्राप्तिक्षिणा । स्रियभ्रम्भा भक्षणने निस्प्रमे स्वानी निस्प्रमे स्वानी

जाउनुःकषभभभित्रगरगर्गान् हित्रमञ्जः भञ्जः मुकवान्यभितिरेप्र

के भगेना के निर्देशम् इर
रासारित्त नर्यक्र गत् इप्रने के

अग्यः प्रियः जन्म। उःज्ञासिकक्षेत्रेवः

व स्थितभा हणा है ।

उहुणं विकास प्रश्नुक विश्व प्रकृति । अक्रिय । अक्रिय प्रकृति । अक्रिय । अक्रिय प्रकृति । अक्रिय । अक्रिय प्रकृति । अक्रिय प्

भन्न गर्गा जुगर्ग प्रि म्रज्ञेष्वभवम्ब्रावर्गण इंट्रि इस्विश्वस्थागीरपविश्वास

> चभाषवः भभगि महगवद्भभाः भगीभगक गंत्रेपभी कड्डिंगस्यः हिगुभ

यहकालयभाष्ट्रभाष्यकवं उद् जीते तृश्विह्जीते, ह्या भिडिकवः।

र ममश्रक्षात्र वास् हगवने भूडि॥

चेथायया ग्रावयः भ्रावयः भ्रावय नन्दग्रहे वेषध्या विष्ठः विष्

भवल्रहः मह् रिकाभीन

भ्येष्ट्रेष्ट्रेष्ट्याग्ववाउषा थिक्ज

कलाष्ट्रः संविजः दुरगडेय बार बा भारत्येय प्रमुप

मिरुक्रः १ एक समसीरग भद्रमुलकेन श्रृष्ट वश्चित्रवृत्रेश्रु केवलेनेवर

वेनगप्टेग वः । पग्था गृह गृह चेर्ट्यहः स्या अक्णियेगगः भिज्ञभाभी पुराक्ष

उद्यानित उत्र ग्रन्मा की नाभिष हमतम् वगश्र ए डि हमत भा ० सम्भ मीकगर्वे वाङ्ग्तन विज्ञ न वद्धाः चुजचभीक्ववगुभग चिरं पारा, श्वरणे र भूभनः कना ग्रीनीर दलभा नभूत्रपरायमाण्डि गुरूनभूभे पक्टेड करणक्य इड मी मकवाङ्गा करणियवि विक्षणः उद्दं में उपाउं यक्ष भ्रभन्त्रसम्भूषेव उद्दूष्ण प्रमण्

रणस्य वित्रभूस्य गारिविभद्भ उभाद्म प्रजं देशं म्थः श्व वेद्व मेव वेद्य हरण करणबी है।

भवाभयगा पि परिम्भविना पि गनगभुरित्रभगभभुक्भम्भ किंग कितिनिकद्र वहकमंबेडि के भड़िक रें चिनंद ने क ५ षभ अउ वर्जाभा नेश्व प्रभुष्ट हुं हुं विश्वह कि गिर्ड भष्टगभीवाय न कल्पड र बविक्तिर नेमे कडे ३३० न भने निय भागनकाने कनकाने मारुष् मुः गिरुपय इ रेक दं जे इः मे बडे विष् क्रिन्भा जिउः भनः समुग्रहस्भान अपदेन भड्डमे एक रुवारी निक्षभिष ठितिर वन् र नमाधिरकर्यम्थक्त्रभा अध्रह्य भाष येथा म्। मुक्याह्य सुरागभाष्मभून निवार्क्षययञ्चः विश्व यनिज्ञस्यक्षरम जिस्हर् निश्चभं उकी हिंगि भित्र मुख्या निवास श

ध्रुंबर्भग्वाङ्ग्रा भूगिक वृद्गिकं नमक्ष्यभूनग्रभग्चेरुभेन्थग्र

भग्नम्। विश्व विष्व विश्व विष

जयुकारी । तकारमिन्द्री महभूका माजार मन्द्री अभा सुर्वेष्ठि उभासप्ति पुत्री सुर्भा सुर्वेष्ठि उभासप्ति पुत्री सुर्भा

भव मुद्दा प्रारं यथ ने वे भग्न प्रदेश मण्डे भण्डे प्रश्ने प्रदेश प्राथः च यह विकित्त ० यह प्रकि यहर्गङ्गङ्ग दर्भभाक्ष्णन्वगण्डम्यम् ये रीज्यागिक्षिः गानकानणद्रामस्यिकितिउरैराधि १

खिभयः सर्वे कव खभुन हव भा ने गुरुष् दनं भड़म् भड़म् भड़म् प्रमुक्त भड़म् निः मुयभभन्मकभा उभा विराणकार्य

मिथेठिजि विग्पास्थिठ विग गुल्बिरं मेथेप रिक्षेष्ठं यद्भ उभा नभञ्चक विज्ञा ने गुल्फिर भेर्द्ध में हैं वे वेशे डे भूष्ट पर्ण क

गुलाः सामनाभभमित्रानं वृद्धः विग्रणः

परभूपयुष्या ग्रह्मा प्रमुख्या क्रम्या अध्यापा क्रम्या अध्यापा क्रम्या क्रम्या क्रम्या क्रिस्म्या क्रम्या क्रम्या क्रिस्म्या क्रम्या क्रम्या क्रिस्म्या क्रम्या क्रम्य

ऋतिभाग्नेयसूज्ञ परमेविषः । एडिपरमजेमविस्नुभरीय विकास वित्रकृत्वा भूषभित्रियानं व मुष्ठगवद्गीक्राणंनित्रुशे उद्देशभक्षणन् मी नग्गणण क्रणकृत्वाक्षीक्रनेभद्गः

भूगनभित्रिक्षणबरुगिहभूयः भूरभूभवस्मिधिहेरावरूज्ङ्

यकिपनार्दिभे उरंप्रि भरंप्रेंभ वीद्रभश्चक्ष्यं या भरः गान्यभवीदभविमे हविद्यक्ष्य



ग्रभगेवगा व्यवस्थितिन्ति का देवर्गे माण्याक्वयः द्वाप्ति प्रमाणिया स्माण्या स्माण्या द्वाप्ति विक्र व

माभागिक गानु भागान अभि १ व्याप स्ट्रिंग स्ट्रा स्ट्रिंग स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रिंग स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रिंग स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रिंग स्ट्रा स्ट्र स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्र स्ट्रा स्ट्

मधीय सम्बाद विस्तित मरम्बर्ड्ड्ड्रेवडेड्रम्ट यदिहि। ध्रम्भयर् यरामभूयाः अउभनयः भूम विभागे वित्र भ्रिवञ्चं भाषं गमय जी हतः भग्यनः भग्रः भन्रु पम् सः श्र इरापेत्रमवया अवक्रमा मवंग भद्गत विक्रवित प्रहित्ति विक्रवित मक पिन भी एक नर्षे नस्याध्यक्ष्य विद्या वर्षे वण कगवड्उभन्नकिक्जिद्रव निभूकी ॰ मुद्रवय्गान्तर भक्नसम्नम्भ सूत्रक सूध मुक्ध मेवचित्र <u> इत्याच्या वर्षित्र</u> भाषाः

. भवयाडि 3विभिर् उ निकिक भेरु पेल क्रिश्रम्भाष्टियने उमीर्थभन उभागभ्डिणनयगः १ मीराहाः परी विडिवाटी भा मिराहि भक्षतः महिन्दुशहर चिथां भंभारणाईभाभञ्ञः मुञ्जि चिथालिडि असि दिशिमा : वगुद्धः किथुनग्रज्ञनभ्रम्भागः मण्याभुगमन्भिः ० रुप्रिचि

# यर निरंप्रवर्षे वास्त्र राज्यानः ।

### रुगैयकिभनम्बक्रिशिश भार

दिश्किष्ठा मूनि किन

> द्यः भाग्वभाष्यपुर्वे उभवाङ्गरम्थाः विग्वराज्या

व्या रिशिवावःका लिकः भूत प्रभागः प्रमाण्या प्रभव प्रभागः प्रमाण्या व्याप्ति प्रभव राः भवरिताभा प्रमाण्या वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र ।। मुद्रहः रिशिवावर्ष ।। माथानविद्यः मीनेक्रथं ने न्याप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्य

<u>"धुजुर्यराग्याज्ञ्यः भगःभू</u>

याः कष्ठान्य भागान्य ।

त्र्यात्रिक अष्टा द्वार विकास स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

उपमंत्रि

म्रु:गिरःभग

ग्रेडभः उगिर्भागवः भाष्रिभव मुहाः।

भानेत्र

भन्नविविक्तिगः भन्नभृष्ठधार्थः

कमिक्इइपिष्ट्रीदिश्वः

ज्डंइविम्यूमंगे कुवायनुत्र राभभन्तायायां च्याप्रस्थ वक्रमः यं अभाग्यम् भागम् भागम् **भग्रमनंक्वाद्विनेष्ट्रबद्ध**ल कवा तवा भारे क्षा प्रमुद्देश कवाभाइपानभड़: येलभुक्रम्य स्वीम् भुन डिउरोशियभीसभट्टेयसञ्चरः श्र

उभङ्ग जिस्सारा ॥

33

### वङ्ग्रनण्डवमीयपमार्थिक

सभीरणी अभर्गहरणीकि
भक्त हैं भार क्ष्मित्र के स्था निर्धा निर्ध के स्था निर्ध के स्था

ग्रज्ञभन्द्रभाग्वसन्भा अक्रमभद्रप्तभाष्ट्रम् श्रिकार्गम्द्रण् भन्नभः पिन्नभाष्ट्रमं उठप्रधंग भेगडः यद्गुरुभाग्येत्र भविषे भाग विश्वितिकामा प्राप्त प्रमुख्य स्थान अभिन्य स्थान अभिन्य स्थान स्थान

प्रमान प्रदेश ने स्मान क्ष्मान क्ष्मा

प्राप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

निचेरः भचजुर्र भनिज्ञ गेयरक

**中国的中央19**19年19日本

स्र ० यह नाराणाः भाषाञ्

भङ्गाभनं

भिनेपरभगाउ: ५ सुगरम

भूर एवडः भ्रम

इषायभञ्जभङ्गः भूनः भनः अ

भरं पादमञ्जी कृत्र पिष्ठ ही दर्शः

उधाविमार्ड भुग्ड गुज्य भावत

भंभा रही उसू

खुयां गीउभुकिने गेराउउ वक

उभा इइसे विकास संभागित ए डिक्ट वः ॥

नंभभगगभाः ३ यंग्रम् एपठ

रविवाहीमा अञ्चलं स्वास

भद्रमुखलंग्रज्ञयस्वित्ररं इध्येवः भाष्त्रवारिष्ठ्

इभभः सभाग्य क्रविभज्ञ भूभेक्षांय धिक्रभिक्त भदरान्जलभाद भरभा भक्रमुभभक्तिराभूम भरायगुः गुरिभद्दरभुद्धयः भरपदियं ॰ भेड़रमेव प्रमाकृ यथा यवाभयी में बडिंग कुरा का केंद्र भ्राविषय न एक कि विश्वया येथ व्रमन्ध्रवात्रकृष ग्रह्मस यारु सारा उभरून भ्राउपन अर्गिपि मिष्ठु क्रिक्ट सुभी वि वीरगड्न गुनिवि ॥ वर्गम्भक् अवर्गन्त्र रुगवम्ब नुभयक्रमाज्ञिक नभश्चार्गनभश्याननानभञ्जा

30

क

डिजिभाइ धर्मनय नेभगवद्गगुनिष्यवनीहरूः

- भारताभावपकाकितिहरूः स्वेत्र द्वारा स्थापित्र भारता स्थापित्र स्थापित स्थापित्र स्थापित्र स्थापित्र स्थापित्र स्थापित्र स्थापित्र स्थापित्र स्था

मः भभ्रपुरम् इभा र भभ्रभ्यः चित्रचिवनविद्यमङ्गी भ्राण्याभाषेल पश्चित्र यहामी भ्र

भिष्ट स्वाक्त्या भाषा वस्त्र द्वारा वि

उत्त्व भन्नगरिश्व

भ्रमः यः भूग्णवाष्ट्रापि उस

मुद्दाम्ब इडर न उषियु

भियः पञ्चित्रज्ञालवान्त्रभी
वर्णम् विक्रिक्षेत्रकार्यः सम्बद्धिः वर्णम् विक्रिक्षेत्रकार्यः सम्बद्धिः वर्णम् विक्रिक्षेत्रकार्थः वर्णम् विक्रिक्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकारकार्यः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकारकार्यः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकार्यः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकारकारः वर्षेत्रकारः वर्षेत्रकार्यः वर्ते

किं वक्रना सन्दिष्ण भइतः म्या विद्यान मृदि ५िड।।

किराम्हिध्रुप्रेर्ध्यम्भिना न मिणिङ नं रणनुकरडा बीनं यम् धीकेमयमः ठ र प्रचा भन्द नंतः प्रयाभागभः ० नहुकुर इस्राण्यसंग्रहिद्यं प्रमहित्र रेणेग्राणभना भेडारिकः स्था भाष्म् मृत्यु इधने पगेरे विवेकः

्रयुविकार में प्रस्कृतिक दिन्हित के लिले हो व

मः प्रापित हिः यम्प्रमण्डल उनुक्र भणिभयम् कः भजीयभा

भग्नरंगिर्धिकेनिश्चिष्ठनग्नंग बीन्गिरणवर्ग ० भष्ट्रभगानुस्य रक्शिया उद्गालररू भभन्य

रिनम्हायानिच भणक्र प्रश्न न खुन्रभाने वर्गाना विश्व है चिना

भद्रस्वरेगि हिम्कभा ० भयुम पूज्रस्वराङ्गा ग्रवंश्वरणकं भविमेषभूभंदरि । उभाग अभु नहार भाजभागिताः इतियं हे श् भू यः पियं विष्वं मिन्द्रियभागिति इद्योगित्र अपका नेष्ट्रमान्त्र भूगतीन क्या नेष्ठा भित्र विन्यानिष्ठ मार्थीन क्या नेष्ठा भित्र विन्यानिष्ठ मार्थीन

विक्रमलकन्द्रियेचयभंनि भभेष गार्थश्याञ्चला गार्वरागनियाँ भगगम्बर्ध क्ष्मग्रीक्क्षभयां भुक्रवादिक्रपक्षभारिक्षभभन्

यः भ्रथउन्द्रभङ्गा ज्ञाङ्ग भवमं भारुगिकगवज्ञितीयः

नगर, भू, नग्रे का नह्या हुन भन्न भिरंडे भी हुन्:

भेदक वंत्रविभा रगेडवहाइमें राज्य उक्त इत्तरभाद पद्मम भूज्यस्याह्य यहाँ विद्रि।

नवं निरमवीदेवेठवंगीरं भक्तः संस्थानगं जिस्तानभा जार्डसे

नः म् डिकिजीरुप्तरणकिवन भने

गर्ग ग

वर्गकेन

ज्याणीने हु अउनु उनिक्ष

येथं हगविध्याणं भंगानं विस्तानभागानं वी देवेठवंय भुडें म्बल (ह िंशे भद्मडें भेवभागानं पंभाभवगडें हो विस्तान् भंभने म्बल श्रिक्त भेद्मडें भेवभागानं पंभाभवगडें हो विस्तान भंभने म्बल भवेड रडी इहर गंगा (हडी हैं भेश्या मुद्दारा प्राप्त केवन पाप वगीकुराजाः भाष्ठित्रभुद्धम्यक्रित्रस्मन नम्दर्शि

थियः नादभुरूनभः अभग

रजे: मप्रिविन मिर्यसा द्विकी बुक्त है संगडित कथा

कषंगंधुज्ञभद्देन ३ भियति इ

ठ इङ्ग्याः भणवः भभक्षतिनः

व नवभिंदर्र्भमरणभागरानं क्षेत्रं वस दिभमा अद्वापक भवीति।।

Digitized By eGangotr



"作物多类"的"水平产" ध्यभ नेखरी विकास AND on account of Lighting charges due for the mon **इभा**त्रगंक्ष DEPARTMENT, Cashjer । यु हु हु न यु न ने Received with thanks from ध्रवश्री Pook No.

वनीहरू । भण्यकिन् भुट्ट

थियः नामभ

रजे:मप्रि

हिंद्रे वे

यस्याग्याग्रुप्त इन्हें भ्यूनेहं भिभेषा जिह्न

कषंगं श्रुज्ञभ्

य नन्भित्रक्ष्मरणभूग अपनिमान If P. P.J. -6.8 1 \_235 Books of 100 leaves each and 5000 forms.

Man Signatus

Digitized By eGangotri

वयीज्ञचित्रिभं ठ्युभिद्धिः भ प्रभाष इतियदा र भेद्धवया भूजीरेग उभाद्यन

THE TRANSPORT OF THE PARTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY O

the self-the

भानेशिकाप्रसूचभा निर्मः ग्रहितारु भानेशिकाप्रसूचभा निर्मः ग्रहित्रः॥ भनवाप्रस्ताः जित्रहानिर्मः

भागवेद्धमयंभक्तभात्रनंद्ध ययंद्रदभा भयुद्धनस्त्रन

नः नेउँहै भरागा । जसमें इरोपि मी हा अवाहाभा नत्र व प्रानुत्रभागः ष्ट्र कगवानेव भू भृद्यः किंभन्छे विदिश्चेत्र श्व हविद्वणः ॥

### ठवञ्चिणकगवज्ञ निष्ठा मुद

भरभः स्विक्रभेरिहिर्देर इवः भ्रणः १४ कः भ्रण्य प्रमेरे स्वः भ्रण्य ५१६। वनं प्रारम्प्र प्रमेरे स्वः भ्रण्य ५१६। वः भ्रण्य प्रमेरे

भष्टः दल इरइइ मबस्यानिरा ठवेडि। ज्यायने प्राथने वर्षे

इभेडेयर ठवेसानश्च उहुद्या भद्रभगमः भद्रप्तभगदिउँ करकामभिक्ष वभद्रप्रभगविक्षेत्र

ठ डिः ॰ यमभेरगवस्य हाभा

2,E

उम्रेवभमः दलाई ५४ विड नदी । नकी इक्षा कि के का नक्ष प्रयानिजी कृतिनक्ष भी भूत के विद्या स्थानिक ।

फिलाभणः उभुननुमकालन

यज्ञनायवभागवः ० अदिव लज्जनं येरामहोजनव्यक्ति

क्रवानाभ्भित्रः भाष्ट्रयद्विगीत्र

निम्न १ किम्न ३ प्रमा निम्न १ विम्न विभिन्न । निम्न विभिन्न । निम्न विभन्न विभन्न । निम्न विभन्न विभन्न । निम्न विभन्न विभन्न । निम्न विभन्न विभन्न विभन्न विभन्न । निम्न विभन्न विभन्

र वनभ्रव भू व भू क्षार

नर्भ भंडित भूडिन इकंप भनामकहा मुण्यू ग्रंथ है वर त्तरकिषा ० नः यित्र अर्वित न्ययनुरुक्नन्त्रस्ताण्य विध वाद्वनिर्यमभनाविधयंत्रभहेनम् भनेषवाद्मनः उपाभिष्ठकेर उभ अंश्रेम् स्वर्षेत्रम् क्रिक्त अवर्थ स्था विष्ट में अपि क्रिक्त में क्रिक्त में अपि भुज्रुभवया १ यश्चाद्विः वृद्धः वृद्दः वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः बाउ थिइक्लण इभग्ने जलप्रिण्डक्थणीः कलर जिविकार प्रतिभाष्टी। विष्ठभण्याणीः यग्रीम्वि अनिनेनकदिपिज्ञाने सुरुद्धार्थ किंग उर जिल्ला स्टेस्ट्रिस्ट्

निश्चिष्वि सर्वेलाडि, विवेकी।

भाग्वेंगेष्यः नवभ्वगीरेषेगागं भूडि

भार्यवृत्याभनः मानु वृद्धिष्ट

नेक्भावनः दर्वथानेत्रभे उपवक्षतः कर्णवपकल वृष्टे गार्देशभेष्ठगावास्त्रितः ०

एक रमें वभू र वे नगरे भूडि

कुर ने स्वमित्रियः। प्यम

भाषायम भाषायैविकभाष

नं इंग्स्य साभ्युगुर्द्द्रनाभा ०

किंग ह्वापः पिर्डिविध भाणव अक्वनं भाष दे इव इग्वर

## करणित्रययष्टराज्या वास्थि

ठज्ञकप्रमुर्गे विनः

## उपविश्वा क्यविक्रमभणिकः

मु:।पथिविष्णं डीख्वः।

भाणवेगीनवड्ना १ एक्प इष्यिभवर्षप्रथण्डपम्भवण्डनवद्धित्यण्यवि भूजभित सर्गनकव्यन द्विक्रमःन

> भेर केर किनं बालक हुए। वेज छः। विशेष वर्ष उराधमान स्वाप्त स्वाप्त उराधमान स्वाप्त स्वाप्त

मनभा एक प्रमास्ति है।
वर्गकारी वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी
वर्गकारी

एर्डिइन नश्चायप्रभुगोन मिरिभारि: अभ्येत्रमा स्वामा स्वामित रद्धभच्यीन गुत्रां भिजीक् निविष्णप्यभाः यक्षक्रम्भः भचभङ्गप्र दिभाभा भर्द्भिनदिष्टेगया उणनः।पगाभागः गत्र्दा धर्मनगाः भिद्यस्यागा जुकाः विष्टु एग भन्धिष

HALE SAME SALES COMPA

वेष्टाः पुराः प्रियेष्ट्रसः उराभु

्यों क्ष्र्यं स्थ

भः ध्रुउयमु भिम्भुभिनाषुग

वृगे र वर्षेभद्रम् भूभूभू

क्षण्यास्यः स्थिपचार्त्

वालिभवद्यः विरोधनाः भ ग्रीवेषन्भ म्योगरिया भिक्

विक्षः द्याणः जुद्भव्यागे

स्वाराध्य स्थापन देना की अस्ति । इसंभाष्य देना कि स्थापन देनिहा

# मुडिगर्णनेपाभित्रभुकः

स्वारुप्रभूति । स्वारुप्त स्वारुप्त स्वारुप्त । स्वारुप्त स्वारुप

यङ्गिष्ठिः पश्चित्रशर्मित्रस्य जीक्ष्मीः सुभित्रेरभद्रसम्

भुभेविसिड अचवडा ० भट्टें मेर जियुकी रामयाभानेवृद्धिः मीद्दीरमाः राज्यह भन्न में अर्थे के स्थाप में अर्थे क्षेत्र में अर्थे क्षेत्र में अर्थे के स्थाप में अर्थे स्राउभद्गयभा उध्रमच्चेष्

> म्ब्यिधरीमुः भग्ने सुरा भन्ने नज्ञहासुम्मापियुग्रम्भा

मुध्र यहे पस्यभाला भुरुगन

र्रेविर वभूभा गीउंठ एंड भेष्ट

उद्यक्त किस्टु भगंभि मंभा उद्येय उद्यन भुद्धन यहरू नमुमी है। Digitized By eGangotri

एवं १भेगाम् अद्भन्ने निह्या भार भ्रष्टे मार्थि उद्याना भि केवलं उद्भविषिभाई निव राग्यिश

रिअप्रज्ञंस्वरभूषा र सीरग उद्युग्णवेशीनहरूमा वज्ञं निभक्तम्माराधीर

बर्बे भरभायनभा भनेन्य

विमः मानुः ने मिन् भूभू

लवं हरावज्ञ प्रकारत्य इ मध्येष्ठ रित्र ज्ञाभिष्ठ

उपा समेदिया लिने प्राण्य में विष्ट के विष्ट के

उषः वाश्विद्धे चार्क्तभारेथउना द्विद्धः भूभः भन्नेवलं स्रवली।

भइभंडेचा युर्घडेंबलभा भंडे

कियाचिम्ब्राधिविष्ठ इः भर्थिः

भनुग लिस्टिन भयानि,

उभा इ.इ.वेठगवरू 'प्रेप्टानकारण(भिडि) च्वरन्त्वा भनुः भनुसुद् द्रभवस ३ एडिम्री ठिनिरङ्ग वंना दिगीय विरमनभा 9 यषठि विसेध वृज्ञे विश्म नभाग्रहें उइनविणनं रही नंभाग्यम्बर्धाः उसन्भागकी प्रज्ञास्त्र मुन उसम्मूण्या उद्गणकीनं व्याम्य स्कीरनेविश्वेभूत्रकाथण्यः भवन

4

म्रार्थभचकद्रार्गं वषा विद्रीउभ्गवा श्रेषेत्रणभाननिमनु न तियं उषा द्रेडे भभुद्रित्रित्रज्ञ बक्तन भिष्ठं प्रह्न अर्

भूरिभार्स यस्त्रित्व विक्रिशिष्ट भश्चर्याः।

वसने एडिप्भारि उपकित्री

श्चेग्रज्ञवनगण ज्ञियंउउग वर्ज्ञाउस्र्चेणेउभुरूभग

मिधू में इस्विभ्रू ड

न्वभ्रक्षक्रम् भव्भ भव्भ भवेष्ठि । स्व भ्रम् भवेष्ठि । स्व भ्रम् भवेष्ठि । स्व भ्रम् भवेष्ठि । स्व भ्रम् । स्व भ्रम्य । स्व भ्रम् । स्व स

भग्नी ना का स्वाम प्रशिक्ष कर विदेश प्रमान के स्वाम प्रशिक्ष मुक्त प्रशिक्ष कर विदेश प्रमान के स्वाम प्रशिक्ष के स्वाम स्वाम प्रशिक्ष के स्वाम प्रशिक्ष के स्वाम स

मिष्ट जिस्मा ज्ञानिय विश्व कि स्ट्रा

क्तिनः भच भार्ममद्र निग्रहे बल्म इ विषः॥

युउभइविषय भुज्ञज्ञानिङ्गन यसनम्भित्य हगाइसम्बर भद्राभभा भ्यालगाउद्दारभी र्गाभे रहे मी भेड़ल भाग भना उर्हे निविद्य फिड परिन्दरः बाइपम्युत्रभद लिमिद्धधीकेमधर्माहवस्रन उद्भवश्रीकाग्य विभवश्रिया काभराराभ्य इकाभकाश्रया यय उभन्नेकरणन व्याभितः

श्रुगयमैश्यक्त्रं,

मुबल की उने वास्थान लेभाइ गं

गर्डः महेड्यनिरार्धभाष्ट्रभग्यभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्ट्रभग्धभाष्

#### स्यानगणानगणिन्द्रधीक्रमः किंग वे भगनिनमानिउविदिरंगनः

उग्रवधम्यम् गिरम्प उपवक्रव भंभारप्रवाहरी, पर्भितिक प्रिरम्प ग्र भवाद परभ्यकाः भूरम्भा स्मू

विश्वपान्य मुद्दित्रव किंग म्वण्यिपान्न संस्थित मृद्दित्रव पार्यक्र भूनक्षण भागाम्य मुद्दित्रव पार्यक्र भूनक्षण भागाम्य इतिम्हित्यः भनः भागाम्य शुल्लाम

ह जनगणिश्वाक्रमकरेडकायः

नन्भभिक यः नं ५ हुतीयभैड्र य बाह्यभा हेक भूषि भक्त हुउ एवने दिके भिष्ठक इंग्येंग्ड यम विषेठे यमसभामिम विषेठेगुली

नवग्रम्बलभगगः जाउःभन

भुञ्च ग्णे विद्यापग्गे संग्रे

भगिमवा प्रमिश्वा निमाने की अन्य का निमाने की अन्य का निमाने की अन्य का निमाने की अन्य का निमाने कि अन्य का निमाने का निमाने का निमाने कि अन्य का निमाने क

भूडिहिन नुभवमण्डियभू ज्ञास्यभू इ षम्बलबलनिमन्येशिद्धांध भर्ध्यादगुर्गवाथवत गूभा सुने शिष्ठ स्त्रे भिययुद मगुः मममम् युकवानुभा यानीकित्र विमायम् विकार कि । विक

ह विमुक्त विभूग गणि दिन् लिंड,

1

## नभगडेमक जिर्बे स्वयं

भेवाभूभक

वनभान द्वार्याय विराध स्वार्यान द्वार्यान द्वार्यान क्षेत्र स्वार्यान स्वर्यान स्वर्याच स्वर्यान स्वर्यान स्वर्यान स्वर्यान स्वर्याच स्वर्यान स्वर्यान स्वर्यान स्

ययानः कर्ने कार्यम् भागानि प्रस्थान प्रमानि । प्रमानि ।

यषा उनभी भगुलनेत्र भेष्ठ व्यास्त्र अप्तर्म निवामः मेहरान

लेदिककरात्राः रमभेनित

मडाविद्धीः म्वल्लिकभवप्री अन्मडी

बाह्यभा भन्भविद्वयनः सः श

भ्रमम्भाष्ट्र विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्य उत्तर्भाक्यमुद्युक्तिः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्याः विविद्य

गकफ्मग्रीकगवर्यसा स

प्रांगिण इंग्वीद् क्षुप्र ग्रेस द्वा अक्षुयकी उनकी इनकि द्वारा

मुक्तः यदाभ्रारायाण्डामुन्ता

इन्डिंगिक्षिकः, यस्यस्य प्रमुख्यिक

राउँसे भर्षणायाम् वर्ण्डण

नैः उष्टार्वापञ्चारवसुभुक्त

1

2

## मकुर्वे वा क्रुन्म भ्यूजभा

कर रमस्य में ब्राह्म ने स्वति हो स्वति

थ्वभभ्रउबद्धभा स्युगः बुद्ध

निरंगी अप्रविक्षित्रभा क

लनन दिसी स्निर्गान विम्न स्कृष्टित विभाव स्कृष्टित ।

उद्धि भद्धीरुभन्देरगद्दन्तः

मू इ.नर देहभने कि भूभाभा

**५**विष्ट्रीय देश विष्ट्रीय विष्ट्री

उभेद्रिइभिवाडिकाडः मिश्रिय

त्रहण, हभनमा दिया श्री हामचेन भनभा ने के दुभाद उभा दिशि

युक्तम् अभाग्या राज्यसम् द्वार

कगवान्द्रिशीन्तरः नेउद्दरकीरिउ

व्ययग्रव्यक्षक्षा । यो

क्षां उत्थार पद्म प्रान्य स्वर्

नकषम्बलनबभुगं भाष

जिल्लाम्भिन्न म्यान्य स्थाप्त विकास स्थाप्त विकास स्थाप्त विकास स्थाप्त विकास स्थाप्त विकास स्थाप्त विकास स्थापत स्यापत स्थापत स्य

इद्वित्रकाभनानिज्ञा

3

3

श्रुनारः भरशं रानानं रहाप नहबनीडि किंबानुभी भउउर विभागज एक प्रमंक्ष मराग्वार् न्युक्रिकं न कर्रहिभराज स्वाविति।। न्तिकं भूति मा य' बुरुयु लियहा रगमादि विधयानि वाभ्यति कंभगरामीनि र पालना प्रिक्य लिस याने प्रदूषि क्य लिययानिक गीरानिन भा निउग्रुका निगाय निम्स विगरिक, भर्तः रामभ्युकवार् हिडिंक निस्भाप नयरम्बण्णाि निर्वाभानिभ

क्यम ज्ञाचिभाइजंब इद्य

गवास

ण्यस्य पर्नेक पिष्ठय भिरुष्ट शिक्ति है।। स्वय पर्नेक पिष्ठय भिरुष्ट शिक्ति है।। सभा प्रतिपृति शिक्तिन वर्षे

的文化《李明·李明·李明·苏·苏

हगवजुलनाभववयग्रज्ञनभा

रिरम्भाग्रिवसभा हु

यनेनभिष्ठयान्द्रियान्द्रस्थितः म्याम्याभभेत्रेद्यश्चित्रस्थितः नानयप्रभभेत्रेद्यश्चित्रस्थितः

किंग म्वलि विभाषभू के दिन्ति भन्ने हु कु भिड़ा दिनि हैं।

र्भविज्ञान्त्र अस्ति । इस्ति ।

3

र्डकीव नश

रिग्क्र भरीक मुश्चिव अरमें उपगणि वगवान् भूगा वा निक्वी ग्रिव द्वारा

पणयुक्तगण्यगम् वैकारः

क्षेत्र

परपद्धकिरीएस्राष्ट्रभभूरभा

इंननभेमुज्यभा सप्ते करेने

जनगंभथरं करेज्ञभइ प्रान्क

द्वांचा वदाचित्रद्वान

रणगत्राष्ट्रभित्रीः नक्वनभेगिन्द्रश्

उच भारित्राल्डिंग्स्भराम

कर्षेष्ठाङ्गालनानुब्राजि कादे रणीबाद्भवेषगवज्ञाद्भवेषं नस्व भट्टेडिनडीउय्यु मीविश्वप्र भन्राभुलशुः भम्यागुन्व मगर्ने ममभेपगी विडवार्गा भावाययाउभ्गलज्ञली इक्रेंगे गरद्वा भन्म भन्म भन्म भन्म रणार्मिष्ठम्भितिरस्यक्षाः भक्तः

उठय निगठज्ञ हुपं भूडिभाषिहुपंत्र॥

मिरभुउभुरणिन सभाव महर्म उर्वान सं वयर मुरिउ दिस्स हाः सुरानि

उत्यंक्षाभुण्याभिक्षेत्र्ये भूषेणभा मे अभूभमुकवानुभा भूकंद्र्विक

उपाद्ग विद्याभाषा हुभाग इत्या थ म्रं स्यायद्वीर्यित्र्भपुगरि नभमयः ० एडिमी हिजाउउ व निर्गियं विचरग्रनभा ॥ यषम्बलकी इन भिरुक्त मह्भले कैकमेरिजिनिज्ञभाष्यसङ्ग्रि रगनभारहरे उद्युचा भना अलि यंभविश्वनम्ः भगम्। जुधुकवा

Ed

ध्वभभागः से नके भूति

मक्रें नेकवां येश प्रश्निवण

कीउनः जुजुःभ्रेष्ट्रुक्युलिव

पुने रिभुद्धरूरण द्विगैयगीय वहस्रम्मकदलभाद भिवनीरि करविष्युमा भिविन्यिकगवर

जर्नः भरंकष्भरंम्दलभू

द्यमंबाउं भ्यश्वित्रविधयविज

धिउम्मचेबुराविउम्रुव्याभिक्ष

विक्षणं निक्षणं यमः श्वाधियः पंभावित्व कित्रकषाभयः निरूप्तयेक्ट्रिय

उन्भारतिक्तन्ता उपमे मुडार्विद्वन्तमा उपमे मुडार्विद्वन्तमा उपमे मुडार्विद्वन्तमा उपमे मुडार्विद्वन्तमा अन्य मुडार्थिक के मुडार्थिक स्टिन् हिन्दि स्टिन् स्टिन् हिन्दि स्टिन् स्टिन् हिन्दि स्टिन् स्टिन स्टिन् स्टिन स्टिन् स्टिन स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स

ठवलयवारुभा अनिभुरः

म् उगरं उन्वासंने हिदेशय

मिरिगडरिगडे धुभडे भिन्न हा भा

EJ

नन् भेट्ट भेगाजनिय २०ने किभिडि भ्या भट्टा मेन दिस्त अन्य भट्टा में का दिस्त अन्य भट्टा में का दिस्त अन्य स्थाप में का दिस्त स्थाप में का

श्रीयभनकामकामकामुक्यान

भूति नञ्जिकं विगलयहिष्डे

उस्'क्रिभक्र

भूभागे किन्नु न किन्

त्रोधे चेज्ञड्य जिया हिंदी

कषायाकी उर्राश्यमभः ज्ञम

नारभक्षः भूषम्भउवाञ्चभा

केवण्यन्द्रभुभुष्टम्नकेतुक्र भवण्यमुङ्किणः भः मुद्धिकाभेनम्यास्मःक

THE SHE SHE WING कलिभन्पदभा दिशीयमुक उद्भवस्था न सञ्चाड वज्ञभा भ्रिष्ठः कत्वरर्ज्ञ्णभा नं रुवर्भरेमदभा स्ने डिसभ ने गुन्नः भिन्नभ्यषाम् गर्ग एक दसे देवानां वाही मी कगव उभाउ अध्यालना अध्यान ।

the state of the state of the state of the state of the state of

3

म्बल्वस्यः चुितः म्बल्यम्प्रम्यः म्लीर् वेड्रत्वियम्प्रग्रं व्याप्तः स्मान्य प्रमान्ति स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

उभम्बरगणन्त्रयाद्याद्याद्याद्याः मथगगम्बर्ग यथम्बर्ग इंद्रज्ञि विश्लेष्टिण उद्दर्भः सम्बद्धार्थाः सम्बद्धार्थाः स्वार्थाः स्वार्थाः

नवाङ्यभा क्रेनभग्रपुर्भवि

इषायाभदर्भेकान्यमाया

क्नाल्युलाम

#### गुः बुगुणी वाभगुण श्रुका पुरेगी नम्बद्धारः

三四 逐渐导纳导路

श्रुगयस्वपम्भागः भिर्मयम्

ग्नान् प्रमुवल स्वारिपित्र॥ ग्राम्यान् प्रमुवल स्वारिपित्र॥

कवारामा देशनेयक भूडिनिस्ड

गुलिरियर्भ सुरूप्भारमुख्य

विषयभवेग्य

रिश्लेष्ट्रभंगः केवल्लभंभउपष

म्बल्गीनक्षेत्रक ठ जियेगः संभागग्यन

विक्षाभवित नज्ञ राजा ०

विगीय मनक सहाभा

इस्ट्राज्य चुचुराउरे पंस्प्य इत्रंगयर

वलायर ज्ञानास्त्रनः व उस्माव क्ष्म्राभ उद्धा कृत्य उत्रवः किंनरणीवित्रिष

भष्यनज्ञचान नमदानुकिश्भपमन्थर न

भेवक्षभ्यक्षास्त्राक्षितः कन्यधिवधयाभज्ञहासूरभभूकरःकर्षकव म्बाविद्यां देशायोः भभु उः भूनधः

या भज्ञक्य में का वक्ष्य में मुद्र प्रदेश विकारिक प्रतिक प्रदेश विकारिक प्रदेश वि

भनः नगरत्वपष्ठपरम् हेर्णभड्यः॥

भगरागुरगः इडीचिविद्धी मैंइपै

भचम भुंडि भयानिहरी

५ि उप्तिष्ट्रमेश्यमियान्य

ग्रद्धः कषणं विभाणन् । धन

विवेद इसने हा भी विषे युच्या विष्णु । ज्ञानिका

यत्रित यद्भिष्ठं वेज्ञलं न न्गानि केय म्थाहिद्रिन्त्रमनः

नीनाम रेगेपव्यान यत्रव्यानुभाक्ष

भाभनवाम्बन्धान् निर्मान्य निर्मानिय निर्मानिय

विषण्जकषाभित्रभीः याअस

उटिगेर्डिगुड्सारा मुद्रेचील्याहः

निगम्यव्

भंभः विभव्यविष्यम् भभुष्तः ।।

लवभंषेर विद्या उभवहवं

रागिष्य प्राप्त भाष्याः

रागिष्य प्राप्त भाष्याः

भाष्याः

भाष्याः

वकष्यभुणयः भ्राष्ट्रवहावि

ध्रामयाय वेरायभागप्रिन इत्रयमान प्रभ्यः र्हे वेषयमान्त्रभावीयग्राप्ति विज्ञात्रभा विभूभा • रत्रीय वृद्धवाह्नभा

य इस्मियमरण भूराकेमगर्ने म्यान म्यान वार्यन्तिनी इंप्रापंडे। स्मिथ्यनिकस्यविवेदः स्रिवार

किंग रिधंनिरंकगवद्माविष्टापराधिवेज्यापितर् विडि

नीउभा ठङ्गालीउराउलाः परण व उरह्म म्बल्भ्ड कॉल्ड्र च उंचे क्रिक भ्रक्रममें उड्याः सर्वे न पे विन व दुस्य अन्त

मुभाभा मार्ड्स्य निवासी उम्बंभेरक बाइइंभिएसभा इव्यापा स्थापिति। स्थार्ड्स्य प्रमुखीयभाष्ट्रभीने

भर्गणः ज्ञानस्य श्रियः स्था

उतगाउँ नभगा वसने निश्चाभ

ब्याह्य श्राप्तः डिव्यमभ्यववतः सम्भूष

बाई। हगवड़े भूडि

गरेनभिक्त इन्त्रम्बलभाषिम्हिभयमितं उर्देश्विकिभिडि बाह्यम्बल बाह्यम्बलभाषि

व्यामीन भी स्राम वर बिंह्युग्रेसुग्रुणः कषं

वान्नि उगुनि विच्यार्गा

गुल विक्रियाद्वर्ग क्रिनं क्रिन् क्रिन्

यैनगकुन्ने अभिभित्र के दिनं हिएन

नेकेवल्यंड ४६ भेष्ठेण्यक्षेत्र क्षिण्यक्षेत्र विश्व विष्व विश्व व

कं नण्यनकाभये ज्ञायात्र यथुष

ञ्जरण भ्रेरम्यः भन्रभागुह्रम

उदि किं कभवमें इस्पेष यमः म्वल्य करु युउँ विण्ड्स यम्प्रपृष्ठे विण्डुक्रक युउँभ

धमेवाः भेउउभन्नेकभदम्

ननकेवला किय व गण्य सार हाज नानं म्वलभाषन सार हा म राज मडिं।

में उत्ति भाकं भारत्य हिला भट्टेंच विरुव्यक्ति भारति ।

## प्यूडें करहरू के लाभु कर्क

निनः भारिभनिभाउउडुव

म्वलभाष्यं वर्भवाकि भचभाषाः चरुवाडो इिक्टवः।

रूगक्रयेगिन ने विउरहमें वरैः

ननम्बलं भेजादलमेगाः दलं विद्य मण्डेक्यं ह्वा श्राप्त भ

स्य स्थाने भन्ति । इति स्थान

कषंग्रान्द्रीविग्मीष्ट्रनाथंगी

गुलानं भच पर्षा कृतं भम्भूदः सिम्मस्मा प्रत्युद्धिया

दर्बर्गुलभन्नुहरुया क

# य गड़ मी न र स स हा भा

वनक्रिप्रभाषकं भू लिभाइण्यः क्षे भूजेनता पृते उद्याभ डि जुड: म्रवलभाष उभामिक एव निरु भम्तः म्यानिश्र ज Digitized By eGangotri भन्नज्ञ

### उधिमन्यापिराभविद्य

विद्यीयुथनिध्यविद्यः पविदः थ

वि उपिवचुविग्रच्धिर

थगाम्कलानुभाग्य मुम् इक्ष्णमानिक

रुष्यमेकभेजः १ लोक्ष

भवभद्रः यावज्ञ श्रिष्ठ मानिभनं स्ट्रीराक्ष श्रिम, पूरे निरुरगीवलकः स्ट्रीरावणः

लि दि देश वर्षेण विविद्या एवं गवम्बला हुस्थि इंडिस्सेरा देश स्मान वास

नकरिडिं उनक्षाः भउनि अञ्चन्यः

उद्रवाद

चित्रति ९ कम्भूषगीकिने वः

न्या । इत्रः भदा मुन्दे हे मुक्त भ

भिगण्डे भित्रनेहनाण्डिए

सुर िक्षा अरुपा भ्रम्भ किंग कथार्थिक दे भरण मिष्ठयं न हवजी दिशु कृतिन क भ्रमिति देवमन सुरुप्त स्थापन किं। भ्रमिति देवमन सुरुप्त स्थापन किं।

भिष्य इति भगगगग प्रदेवी

पोरमिइभीम दिलेपस्थितः

जिंदिया के बार महन्या था

विश्वापः यहभापश्चिकाना

उम्जनमंब नो उम्भक्ष हिभित्र कैभित्र कहा येगाय महिधा भित्रि॥ भग्रभग्रमभंभग उपम्हर भग्रभग्रमभंभग उपम्हर भग्रभग्रियाह अवक स्रम्यः इक्वे हुन्। विकास स्रीवद्गस्थिक प्रमः

उभासी भक्क प्रश्लेग विद्य

रारणम्याभा भराप्रध्यूरं

यभक्षप्रमुन्धिम् । । ।

मम्पानवाज्ञं नान्श्रप्राध

इध्रमंग्रेदिक सभाउभा

भंभावरापनिर्द्यभुभुरुभुरुभुरु

धरमभा सुरम मी सुक्र संभागभन् भिड्ड भुरभुडिडी हो उट: भ्रवेठगवड: भूमधेरुभ्रथ नौनाकषा अभिविधवन भवुव **लभ्भक्विद्यान्यक्रम्** भीतिउध उस रामभविणिश्वरवयनम् ननस्त्रन निक्रां हि मेंभाग निक्रिह्निं किं कष इल भहं महीन निर इपयां नु भाषन निर्मा विभिष्टगीडि वयनगण जुउउडि ॥

44

# धिविविचकलभू एवल भूके केंद्र

उमा हिन्द्रीयाभिष्ठभयाक्ष्रवास्त्रे

उक्षियवजिन्त्रः भग्यः

नेशाभितः सभना निष्मुंभा कीक्कां स्वलिक्षिः स्वलिक्षिः स्वलिक्षिः

क्षेत्रभग्न व्यक्षः क्षेत्रभग्न व्यक्षः क्षेत्रभग्न व्यक्षः व

मिन १ एक रमे उ रू व न है।

वभुउभु कषाम्बल्भाका च्वास्त्रनिवर्रे Digitized By eGangotri क्राम्हण उर्वेडि। मीक्गवनं भूति इविन्ति है। वद्यान भारत्यका क

व्यवणापरभभज्ञनभा क

त्र भी युभः शुरु हरण है इस

जंगानः वयंदिकभज्येगि

इभनः कमवर्भ इमुब्ल

उतिष्टाभभावके गुप्रे उभाः ९

मकारमे बीहगवड्गमनभा

उ गवहरालिज्ञची उनिविद्युगं

चन् विभोगकमकमिलयः दियमं नेहाफ Digitized By eGangoth



# भ्रुष्यस्वर्णस्वामुह्याकः

रायाँ ० भूषभमानकवर्त्ते । जैमेन प्रमेशिववल न्यस्य । जैमेन प्रमेशिववल न्यस्य । ज्ञान प्रमानिस्य । ज्ञान । ज्ञान प्रमानिस्य । ज्ञान । ज्ञान

न्धार्यभा भवभा ० होंगे त्र्ह्यन्ध् विद्यावस्य में इस्पृति मुद्र उभा दिवेकिम्द्र गवडू अम्बल्पिवक इहिभ उर्थे पालिक ह अभाभाषाम् अभूम निष्य क्ष्मा अभूम भूमियम् अभूम निष्य हुम्द्र म्

अभिहिरी दिंदे हैं: उउ हुणीन-

A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH

6.8 中 图 6

म्बलभूजन्य परम्य निर्माह्य । वश्रीमा संस्कृत मेड्य बार्ग्य

उभाइचारागाहित्युं परमेत्रुरभा भिष्णालेद्धिक व्यक्तिक्षेत्र्वस्थार (क्ष्युं क्ष्युं क्

र्णेरिणगर्रमगिरिशिष,

**५३,५२ग छिन किसंवपनिनये** वनवष्ट्रेन इस्मिक्किक्ट्र इस्मिन वा वा अस्मित्र वि

व न जनविष्णगिरिहिहिहिहिस्भि

3

उभूचैगभिद्धिभृतिः भए ५ई युज्ञ भवेरा इ राविष्ठि॥

### याबद्गराग्याकमाभूगडिनजुरा

उ द्वाभगीवसन ठगवन्प्रि ननकभाम्ब्रु निः भए ए देवर्ज ठगवड्ड ष्टम्मन १० डिश्जिन छ मश्री भूभक्ष द्वाभ द्वाभाष क्षिति । इन्ह उर्वेडि

उत्तक षा अ। रेड धुरागी वने क विहि

म्वलभाइलें कु मंगकरं

गीरिउंकन्प्रधार्यं म्वलभद्गन

भमानुं निद्यभयनि नक्रणान्य मी भरूर देक विगित्य निव्यक्ति । इक्षण वेम्स्वयि इक्षण हेन् स्वे विद्यान

गानः धर्माण्यकेरवर्ष्यम्

भेप्रि निद्धगत्र अल्डिंगुज्ञ मेर भेप्रि निद्धगत्रन्थिरं

दग्रमत्राज्ञणभ्रापन्यग्रभंत्राः

यमु ेपि यच भभर युवण दुक्ते पिति भकारुविमगीरलभूकी

भृयुर्गम्भभागर्भाकारा ० व्वा

नत्वभ्रिभचपावनइभायां ने अच्नाक्रिकइभिद्रा र्रीयभेर्यवसन्भा कन्भ निहा

अवै: रियभागनं

नक भगभा इभार विद्या कथा

नं रगवड्ड ए भूए भा सुधीय कल्ग्यानिहिड्ड वा पडिमेड्ड धमुभा के नम्य या मि हर्जः रङ्गेडविसन्रेडरं रुडीयँ सम्बन्ध

रगवर्षे भारत अस्तिन निज्य

8

43

किंग में रुगवहमा नस्ता निरु भम्हिभ त्रामा उद्दार <u> ज्</u>या

Digitized By eGangotri

यग्रम् उक्षभ्यणभा िङ्ग्रम्

ज्ञभन्न षः भगेष्भिवविषुरगः

उद्भवउभूपरभाविज्ञितिहाज्य

ज्ञास मी सकः यभुरभन्नक किंडि।

गुण्जुनम्मः भङ्गीयउँठीकुभ

विश्वविवर्कः

भङ्गान्यः उभवनिर्म्पर्यं

मरीक्रंड इंभ्नंड जिभरीध

भानः प्रमानमुकवानुभा एक्ष्मनस्वर्गस्य एक्ष्मनस्वर्गस्य

म् उः कम्मनिवर्किन कप्रालक्षक्षणानियुग्र न्यभ्रष्ट्यक्र इभ्रश्नुत्वाड्डी संबाद्यां यह यह अभ्र ह्या में ब्यादी या में भश्च्यार भृष्ट्यार ये हुन्द्रा डिभिमुनो उडिम्री हिन्द्र इ नेगउँ विरमनं र सुषकी उनं निरुपणि इपेया भे निरसन भाग्रहें उड्भच ए प्रभुद्धिकी रू

र निभश्चिर्द भूषभैनायद्वयनं

व्यव्यवस्य

उद्गेभर्भः मुख्य शिक्ष्य

भृजार देः

बाकिस्टिकानाचि एउटिन

अज्ञाश्या वृद्धिय देवाः स्विष्ट्रे

श्क्विविविद्युभित्रेयगुरुभन्ने

कगुणात्रवस्वनभा स्वरम् मी

पुक बाजा भाषा गिरमुङ

भरीरअह्मानक घुरेय दुरावा चंधं रुणवर्त्तं न की रुगं डिडि सं भर्च चर्छा रुग्ते न की रुगं डिडि सं भर्च

नेणेषारगः उद्यवभट्डपुद्धव हणवक्रणम्बरमीराड भगने उद्यवभ्रष्टकगव्या प्राम

ममिरं यचा हवित क्यं उपवार्ष्य विश्ववंत्रवेड प्रवमस्यानीभेषेत्र्व रुप्रव मेकलवमेधलन्ल यमुड भन्नकपमेनगीयर ३ भूषम मीनाग्य वाक्तं कगवतं भूशि व पत्रः भंगरिष्धरेषात्रु भविवसीगर

लना उउःभद्देविभृष्ट्उयिक्ठिधि यंठयं रायमुम्बिष्ठ्यस्म क याज्य नायम् साम्भ्रम् इथाइ जन्दन निर्मेशन्त्रभेक विका निर्मेष्ठ यहा भभाई की हुने निर्मित्रिः

I STORE EAST STATE STATE

विनामाउदं हमवरूणनंवमः भविर्भिष्टपः उद्गिनिति।

रगगरु विरंभुगण्गिरक दिणिश

जिडे भनभाभ इ भूण ने भनभिवरुभा नार्दभाः भार्णवे युर्थे वायुर्न विरम्ति।

कहिरुद्वायमंग्रीज्भुमित्रिभानभान्य

विद्यान्यमंत्र उमिक्कभनीयं बुद्धवर्यिन व्यय्येगः

वर्षे रद्भाविष्ठम् विष्ठु विक्रायः उपाप

यया भूभिक्ष भागमात्रानुः क्रमनीवधक्त धार्षनिवाभास्त विसिक्षत्रा

क अज्ञेषानु अविपश्चियिष्य

किंशगाडे प्रकार के किंग के ने में ने अभने ।।

रिज्ञ भत्त वर्ष नग्रा नग्रा ने स्वाधित स्वाधि

मनय शिव्याउः धाषश्चिम्यह

द्राकी द्वन द्विभट्टि कविड भगभन्तः भडिल्ल भिरूगकविड उडिनारण नुरुवेन ज। Digitized By eGangotri

विवाधक र भूगायतः भूवीरासि भियकीतः त्रीप्रपादः भुजारद्विभ सीभ्यम्वाराद्विक भूजार्थ्विभ

क्षारग्वरः क्षनीयम्बर्गाः गुड्डि



प्रश्वण्यमा क्रांभंज एउ विचिद्यभागनाभिक्करभेज उठयभा यिगिनंग्यभिन्छी

गर् भगलंबज्ञ ह भिडि

उद्याभागकी उन्मा एउ की अभिव विश्वविक्ति स्थाप स्थापकित स्थापकी स्थाप

भूकः हरिभन्न अविग्रहिती वक्षेत्रम्हि प्रभट्टिन किन्न क्रिनेश्वर भेगायहवर्ग सर्वेत्रम्हित्रमा यूथात्र स्व व्यक्षित

गुलक्ष विष्ठ भ्रमानियामा भूल इसम्ब निवृभविगमिविवमागालि

अवरागित भूगानि स्वकीनस्न इरामी नियलविष्ठभूगानि भर्च के के के वस्ति के स्वित्रभूगानि निवर्चने सुग्लकं Digitizभाषा कि कि स्वित्रभूगानि नाभानि।। पण्य

#### उनेवराग्रमभनेभद्भविद्

निरभुग्**नर्ग** 

भयात्रुभाग्युपष्ट

मोबस्पूर्णाः **पद्मविक्षु प्रशनाबाङ्गभा श्र**ण

**िकानिचेंमेगाबैद्वेड्यम**भ

भियकुराद्यादिनमन्भर्भे वक्वनंप्रविद्वास्य विद्वासम्बद्धः प्रश्चनं भेषान्य व्याप्ति । स्याने द्वारा परिन्ति स्थापनिर्धा

ट्यास्यान्य ।।

म्रभवरः

भ्यन्ति इः



यम्भारांधरा मुख्यभारं माइ स्तानं नाभराजाम कर्षणाणे में नामायाल मुख्यमा में हैं वैद्येल प्रश्नानं ना युरानाराया यि दिरागाम्सम्

रहारभा स्वःभग्धभङ्ग्य

द्भदगुमडन्दगः श्रीगरणिर

गड्यायग्राधक्यम् अव

धाभधुभवगितम्ब भनिष्ठे वषाप्रमाणवनाद्वर्गः महि इंड्रह्नाभागवं निरम्ब भूयश्चि इह उ नाभक्षाद्वराणि विश्वद उभूति भिडि

धयाभाउः म निष्ठिरेमिक बुद्धवादिश्वधाविषु पृष्टुः भवा

नचकाभनुदानं भाउकाना भाद्रभ्म सुव्दित्रानं सुम्मान् किए हिरधनिवर नंक षमकमें व भ्या मुर्धि । इर नि ब्रिक्षे विश

Digitized By eGangotri

तुरपिहिः यद्याद्व राभभोक्ष्य किंग नभिष्ठारलभारम्भिक्धारणनभ्यन्थक्स्रनेक्वि नइन गृक्षण दुउत्र प्रमुक्गुलपन्थ्र नभा वय्य डिभाई भवील भिट्ठाः। अत्र व्यक्ति क्षेत्रः। मन्य नेक निकडिया निकडि रवि नेक निक्सिड भन्नावित्रम्भर्व उद्गानिन् नभ्रीभरं परे नुगानुत्रकार विकास गवभामद्भः पिक्ष हारू भिनेन इत् मुक्ताना न्या इर वनः स्वनभाष्य ।

दानियाभियाभागः,

नत्यं भइनामा यूडी ब्रेड क्वता भ इराड मीग्रम्भरण्यू रुत्रभी

धृविभुडंदननभववा वेज

प्रमण्डिहः प्रति हत्रगाहः अद्योहिः प्रितिहे अप्राप्ति । परितः भूतिहे स्त्राप्ति । परितः भूतिहे स्त्राप्ति । परितः भूतिहे स्त्राप्ति । परितः भूतिहे स्त्राप्ति । भूतिह भूभुमुद्धदाः दिशिश्वमे वृद्धगि नजप्रभानादे रियाउनः

कन्द्रअवंवै परवमःभना इश्ड पडिड SIS

गुरुणगन्धनंगगुरुलिग

नथिय भ्यन्निरानिपण

नन्भदरः भाषस्मद्रसेव भाषाद्वितं वर्तं नहु न्यन्भभाद गुड्ल भाभग्रावर्ष्ट्रमन्यकृति मात्रक्ष्यक्ष्यकृति ।।

मेडे १ भव पप्यवित्रित्रभुष्ठवित वाभ्याक्यभुभ निश्चेर्जिनिभकिष्ठिः रेभु धम्ब

**ट्रणनिअपनेर्रियानराप**्र

प्रथम् अर्द्वार्ड्य भेभागांतृ नमृद्वि । विश्व नगण्य राज्य स्थानि नमृद्वि । विश्व नगण्य राज्य स्थानि । विश्व नगण्य स्थानि ।

मार्जिया महिनाराष्ट्रवीक भिडिया ।

रूप्याप्रभिन्नवर्भयम् भ

की रिउ भूभें भू यह के के महाभ थ

यषः ननः यषगरेर्व

मक्ष्यादि । विद्युम् जिः मुद्या क्रियं चाउँ उप्रजे

ठ वस्तु उभभ । उज्ज ज य म खुरा

द्रावहरियापानिमृष्ठ्रियोऽस्थितः स्रिवहर्यापस्य स्थापन्य स्यापन्य स्थापन्य स्थापन्य

मक्षत्रेश्वरगणज्ञ द्वार्य । प्रकारण महास्मार । द्वार धर्मे मुक्क वास्त्र भी ग्रियेभ

विभाविरभचर्पेयः भागिः पिरिडेगहुकप्त निप्रहभाने निश्चिद्दत्तः भेष्ट्रितिभूजिक्ग महानिश्च इत्रबंद्धनित्रभूद्धाः। नश्चिद्धना नग्दः परेक्द विगन्न वृत्ते भूभवारं गीरूप रानकीरुगा नयस्यःकप्रभ

भक्षारेभंनेबरगर्भभक्तंकिनं प्रविद्यार्थिक क्रियार्थिक क्रिये क्रियार्थिक क्रिया क्रियार्थिक क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रियार्थिक क्रिया क्र

ग्रान्य अस्त्र स्वाप्त स्व स्वाप्त स्व स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप्त स्व स्व स्वाप्त स्व स्व स्व स्व स्

धन्नणप्रगणकार्ते प्रश्चित भ्रषेत्र राग्यः मेङ् जभागःक्ष ने धनिः प्रश्चित्तानकिकीधि

विनेयाभिकच्यभा

उभाविग्रम्बाभावनं नभे मुग्रलं प्रतक्षकं विदि रकः मुरुभिनेभियनेवभर् पामभूगु द्वारमेर्डिक्सी भगम्बनावंकरः ग्रह्मिषु इंचरीपंयस्य इंभड़भ उ पंचे भिनाभि गग्रवग्रमभूभिवद्गणग्रे भाभद्रीरुनंदगवंडेगुलक्ष

रायाभा विक्षुपुर्भ्धवर्ष

उपयेगारव में वाद स्वार्भिन भार पाक उत्ति । कार्यालि विक्ष स्व न इकी उथना उन्न भार विक्ष स्वार्भित स्वार्भित । स्म विष्ठे भिक्तिभवाष।

## इस्किनिधिन राय्नि विय

भारतार प्रितिभा ३ प्राचेल वर्ति वर्षित हु ज इम्मा इस् विष्ये वृज्ञः प्रभक्ते वर्ष्या भवा इन्ह्या क्ष्मा स्थाप प्रमुख्य द्वा देव वर्ष्य क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा क्ष्मा वर्ष्य क्ष्मा क्या क्ष्मा क

विभेदिउभिवरभाग्यान

अंडिविविध अंडिविविध

इयास्मित्रुउभिद्यम्पधि

यषः भारती विया भए भरति वे क्योग निहरणायनि क्यारिन

उपावै उनिके भद्र दिक्या लिंगी

युराभानः गर्वविभ्रम्भ

ण्यिरगवर्नरू,



भव्युनिक्छे।पन्कर्वये

गभा उभनम् ४भड़े हु वय म्भीशंभाउकेन शुरू व जभी भे अ राजक उस पिष वुमगणवयः ध्रम्माभ नवज्ञभा प्रवाधिमम्हण श्विवंधेडभम्मनभा रहा भड्ग भड़ा भट्टी जूरेन इडि पक्रभाड ब्रेभज्ञ निनयनुरुष्धिम् भूभीय म्हीउँ ए हिस् उ बहुम्भयभारमम्

संबंधनी धडेः वेज्ञं ०न भगू

कलेलिक बहु विष्ठ हो।

क्रमाज्ञिक वर्षे प्रमुख्य

निरपरपः ज्ञामनारायलिङ

उन्द्रग्रेवन्थभभद्गान्य भा नामम्ह विद्रम्

थर्म मुक्त वाज्ञभा

न्यन्धिर्द्या अभारत

सन्दर्भसं मुप्युक्तभिक्षा

इक्रमण्डलभने क्थराउत्हिभ डिक्रवः॥

3

Digitized By eGangotri

यप्टहगतरः

बुद्धान्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

गरीयाचित्रक्षक्षण्यात् । भूष्ट्रा । भूष्ट्र

ब्दात्रयग्रभगा भवियेर

भक्ष गुरवार्याभानं न तत्र्य

अवेउवेन िभभगन्ने विस्ति उन राज्यक्त स्मार्थः भेदेशियभुभुद्धसः भरस्व उपण लीना कषा भवना भिन्दिशि जुगीराः ॥

गवंडगवडी उनंतिर पे हो मृशः भाषन भिड्ड भी दूर्व दे म्मितिरस्य भारतम् स्थानित्र स्थानित स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र युंजी मृजा लिए परा पुगानिय किंमकप्रवर्धेय ए भाव **द्रारमभड्ड्यपि हग**ब्राम जिम्माः ३ म्यूम्पानुक की उनिभए ए भइडः भगदि इंग्ने उन्हें इड्रूमा किना वज्ञामा भन्दे भन्दे प्रियं यवकानास्वभुतः भचकरि निक्रिय्राभभक्ष उनेजरः इभा सुविद्यी दुन पर ममभनगरता जभा मनग्र उद्येष यार्य प्रस्तित्व भवने प्रमान

पप्रहेगडमिड्ड इंग्लंभारत पप्रहेगडमिड्ड इंग्लंभारत

नमें गण्यश्चिमभन्गाण

चेभ्क श्रुण्या स्थापन र्वाण्यक समस्याधीयः स्थापन्यानः समस्याधीयः

वर्षा जाता । जाता वर्षा वर्षा

### त्रयुक्तिमित्री ॥

क्रिंगणिती समि उत्त वा निर्मा क्रिंगले सी क्रिंगण भंदे विषद्ध उव विदर्भ विद्या विद्या क्रिंगले क्रिंगण स्वाप्त क्रिंगण स्वाप्त क्रिंगले क

Digitized By eGangotri

त्रवङग्रन्नगारमज्ञाक्तरपर्वे न्द्रवलमा सानकर्द्रस्यः गवलात

महेव भिष्ठे गाणित्र विमायक प्रगाप्त प्रमान कंभगा जिस्कालभा नज्ञ भीनं म वंग भनकः भनकः यश वंग नगरः यथः राष्ट्र व क्षार्य किस्ताला

गेरम्बास्यरभरत्तनकद्भागः

पिर्म्मन्त्रम्य भर्मेयत्यंग्र हार्वक्षिण्य स्तर्भाष्ट्र स्तर्ङ्ग स्तर् पियिविधुको उनीयनको उप्य स्त्राण्डी का निः मी भन्ति भन्

दिविद्यक्तिः विकारस्वग्रद्यः

वरभन्नवारोदीनंभणावारियः वर्षः के के के पदश्यी यशुंग्निभणवनभन्नक

प्रशिद्धार्या निर्वेषभ्या निर

गिरंडो विद्यानितः क्रिक्टणन् जवभकी उनिनिद्यां की उनिम्बारि प्रमु भिष्टा प्रमु भिष्टा कि स्मिन् शिर्म कि सिर्धा कि सिर्धा कि सिर्धा कि सिर्धा कि सिर्धा के सिर्ध के स

गुलक्षःभारकियाः कर्नेन विष्ठ्रभ्भवःश्रेष्ठेनिरु द्याः धरमिलाहे के दिनं इ उपयोवम भूराभिन युरेविच्छ प्रभा एदा कि की उनेने व भू थड़े डिडि कि भव ज हुआ। मानिम्धिर्भभातिः रेभर याभन्धभन्गः ग्राम्यभनिष्ठ लवं मकी उने परपूलमि थकी उने उन्निम र भारिभाग्य रूपिरा राज भाग्य भक्नेप्यो कन्येधनिया किंग द्वस्थिकने: जुरु हिं प्रमारीनं दलि दि

की उनि नेब महारा भका रागनं युज्ञ में वे हा ज क्ष कि विकि ।।

रापत्रिक्षिक्षक्षात्रुमाः कीर्

करिन एवर स्थिभज्ञ न हर

परवृत्ता दारप्रभावति

इंडिंग्यं यस्पेडेभीयः द्वाप

रेपरिसद्धां क्रिनेश्वर्षा विक्रिया क्रिक्स विक्रिक्स वि

कउभेदगीदयः पात्र्वञ्जित्र

ठ विभगिररंशिमभुडयः भुरेद्रभ

भरभाग्रमा चाउतामी

श्वग्यवेगेन

3

महि थ ध्रिष्क में व भइलेक महिन् थ्या भने प्रविपा

स्नारिपार्वेजमारिसार्भमा

砂道

गुज्र दिहरा

युक्तभ्यानभा गरुक्तवनुष्त

यथ्व का भना बङ्गर के के गुल भर्गा न न वङ्गर ध्याल बुद्धा हि हि । भि

वाक्रेनभ्यंगयि नानुविद्याभु अभिष्ठि।

इन्न भारत्य ग्रम्भायातन्य

भूमधभूजित्रभरेये गण्यमुणस्म

नगुनमुहित्वः निधमुनाधि हरू नग्नित त्राम्भाष्ट्रवः निधमुनाधि हरू नग्नित त्राम्भाष्ट्रवः स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्

<u> थुग्णिननज्ञ भ्रम्</u>य

भवनक्ष म्य ४ ठग वेरे गुल्य भूने व गल वे कु <del>णनभनुनुइण्डभ्यद्वभट्</del>रभग्ने कीनुवेर्ग

#### न्विद्धः रसंभित्रभेत्राणयहुष

# श्चिर् ने ने ने न विन्य भर्ण भर्

किंग महिंचया मिथवांग्रेडणवज्ञभादि भिष्रिउणहा महमाइ क्षत्र य स्पारिना भी वद्धिः भू भगने

चंमेरिभम्गुलक्ष्मग्रास्किः

भूरणानुमुक्तिभननिवेरगगरु

अदिगः गम्बन्धपण्डहरूः अदिग्राः स्वन्धन्भरः मुक

वाहाभा । उद्गुद्धगर्वेडम मिगुवर्गे अह वलार् भवसंदगि

प्रभाषेग नि

सीमान् एं॰ नाष्मर गोनिन्दमहनी जेव जगदीश

मीरिलया जो नमायको मेजीहै उनमें ते हो जातः भोने निक्रित्रमा उत्पर्ते किर दो मारा तथा जो हम्पते सेवन करनी सीत् मुना ४ नने एक पड़ीना इमाते

या एक तोला रमनत नन खरामें भिलाय चारें। वैमेही अपर एक प्रतिका शर विश्वयमणशहरे।।

बेत बनरवरंगमें प्रिलायके त्रयन जे नारं।

निकामत राक खार्वे ॥ जीन मनना बीह का भी खानें, जिससें नीह का अरहा गरीनिए भी परपारे मुक्ति हैं — ग्रेन १५ मो

फिर विवर देनी नामिये

হি থায় প্র শবাস্করি: विषष्टित्र हरू ।।

## क्रुष्ठवंड्रेलिक अश्विकः वाश्वक

वक्रायासम्बद्धान्द्रगवि भनेनिवसन्धि येगदिकलमेव त्रीहिः प्रभिष्ठिक्रवः

भचनकुष्यथ्ठगवरेगुण्युन्वगण्यकु ण्यम्त्रवरुष्डभाद्रभष्टवभारेण कीवृथेग

न्वृद्धिः क्योध्यां क्यान्य

ष्ट्रिइन

किंग मन् विश्वया म जीन यु रुप युर्थि प्रि

चंमिव

भागानु

यदि । इ

वाह्यभ

मिग्दर्गे,

KARKIMIERIV SPACE VIERKOINO SPACE OS ESTAFINS MILING SPACE

POST

प्रतिमान पं नामार नेप्रचन्नमह के निस्ति । स्वर्गान के नामार नेप्रचन्नमह के नामार नेप्रचन्नमह

बीदाल्यान्य विश्वप्रमन्भः ने विश्वप्रणाचि

मुर्गे दगदार निग्रल स्रेष्ट्रेड

भरमदंश नंग के मी दरे ठिक्ने थरं नहें की इस विधार भरा हिता । कियर भरा के मार्थ नहें की इस विधार भरा है की इस विधार भरा है कि एकी हुन ।।

एडिम् ठितिरङ्ग'वस्य प्रम भूमम्मलं निद्यार्थं धर्मविरम्मन्मरहेडे॥ विरमने उर्ठगवस्ति भूमाल

मीनायुगरा ४इम्बवगरेगप निपीपि में मंद्रेयवेपप्रला

मुखर्वेडेनिक असिगः वाश्रम

वक्षायाभभष्टहण्युगविद्र भनेनिवसन्धु विगादिकलभेव व्रीहः भूभभिष्ठिक्षवः वैदगवित्र याभाभिष्ठिष्ठिंभनः एकप्रमेश्री दगवश्रामा

गज्यां चे गांची मासि है। भन करिकि: भन्डे भन मुह्य धुभष्ट

स्वार्यका सम्मक्ता निक्रा

भज्ञ नः ज्यू भग्गानि ग्रंचे दिने

वनामधितविमितं किंभनः भीरे निविद्य ।

नडेयभेथामक् उमुरक्टान

ठ्रअपयिष्ठः श्रुपिभमृत्यामिकिविधुग शिरीयन्द्रवसन्था नरुका काशीह भित्र भटिये पमका उनवै ज्ञामि चभन्भेभरधागाउर नमह धीक लिपाउस प्रचित्र होरे केष्ट्रवरण्डेडिशः श्रुपमे उभारतगर्द्वा होने हेन्सी हार

शंभणस्पितिश्वण राम

भंग्छभाद्भनुद्भविवेकः चिगश्चिउत्। विविधः।

लाकः भारः भ्रमभागुनागामा विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विषय

शियभान्तर्गिष्ट्येष्ठगदान्दर देवतिकार्ग भित्ररः मुद्दुरुवन्यरुद्दुभच्छः

ज्ञाभवाजनाः उधाउवाउना रायाह्यप्रभेष्ठाभा भि

यभंभेरुविद्यभेरेषारियांग किंग्रिक्ष्यकारित्रयेः

र्वेड इ उरानराष्ट्रः न्रुनुमुद्धिन्नर्डे भवाशंभिने व्यवद्गल्नेवम् नुगुर्द्वायम्क्रिक्स्रुवग्वरुन्

ग्राड्य वश्द श्र्या ड

**प्रेमंकिनहर्गक्तभा**स्त्रहरूमा

द्भभवाना भचान्त्राहिमाङ्ग

गउँद्रबस्ध्यिडि

#### रुगवायुक्षेरुभः यष्ट्विश्व

इ.स.ड्रिच्चे ब्रण्

## रेविरिय्वलेडिंबिएर्स्ग एव

ने द्विगि मिक्भी

भरुर्गेरेविधुरेगिनभमुक्षम्य

किंग यम कष्टिक्रगवडः भरणभव भन्धाकृति।इग्टिंग्ड्रांक उस्ते वसने भन्निश्चरानुशानुके भन्निशि

श्रु रिले हैं ने केरावित

युणीमभग्रभाना हिनिविध्व

स्मानेन मिर्ना येभेष्गे सेवाउराउप

भूनभाजेल महिनिविद्यगितं येथं ग्रन्भुग् (परुगवग्नेवभरे

रशुम भूमारुष्णभाभरमुभा

रुगाह्यइ'भारायभागंचे

व्यभुभाषागुल विष्भग्यभा रवर्गः ज्ञभाणम् उभागिभ गर्धेव हराः

उभन्नम्यवनविद्युष्ट रमयविरम

येडे कगवद्गालमील भ कप्रश्लेनेक्निप इपायि इहाद क्रयाकिडि।

यवार्मा क्रयाम्पनिकगव्ह स्वयः श्रम्भविधयं कगविष्ठः स्वरः क्ष्टिः अर्थे के

भनकारितः यः विकासिकः विकासिकः विकासिकः भक्तिकारिकः विकासिकः विकास

नभर्मिथभा भावनुराधकल

गरगबद्ग डिप्पेमेदेखि जडनेव्लाडेन्योगः समभग

क्षि वाक्षे क्षा के वाक्षेत्र क्रिमेण्यं येन उसाग्णज्ञीयः भाि उद्यानिवर्गेरु पिर्भभवरा भिद एक ग्रम मुकव कुभा नउषा भंभार मु: पिक्षाहित नेहार महि डि मष्ट्रभग एका भक्ती गुभाग मनामिषु निवमः भनुभाष्ट्रानेव सर्द्र उम्म श्र्यः दश्लग्रमः भथुमेरगर्यः निम्दिग्रहमु युक्तियुग्न भूमं उभूभभग्न उभाग्न अ

भद्रालेनेव

लिब भारत सम्बंधित है मु:गपानुभागभा

भयाभनुश्चभनभः भन् भाषभ

यादियाः निपारमेश्वरभदन्य

विक्रुनभाचें रेभेनरभाविप धम

इभा नयेगाभिद्यार्भनहर

भंदिइ वृत्रेष्ठ अद्मेव उभृष् ध्रथा मभद्रान्ने व भद्रान्त्र व भव्यद्भार्य प्रदेशः

लवं यविध्यभाषभाषामाचा विक्रमाभाषा किंवा माभाषा कि म भग्रिङ्ग सन्भन्नियुपं भक्षी

यश्चा अया इतः भाषय

स्राग्धियाः एकप

भुः

7/3

मर्म मी दिश्माल भित्र मह भश्वन ना भीडि के भाडक हो वेन्लिडि। मनाय बाहा वेन्लिडि।

विषुपनिंप स्थान्य संयग्रे

रिलाभिनिकनार्देश्यापनु

उदारियः मयनः भन्दि ।

स्थान निक्ति विक्ति । विक्ति

ठ यउथाभरेउराउँचे शिष्युक्तण्णाः रवस्याणाः

भिकाभरः

धिकिस भ्रा

रियंड रगा मुद्देग हुरग मण्ड विषेत्र इपा विभव रगा माम भाग भाग प्रशिव वर्ष पश्च र वियव य भू भिष्ठ भभः भभम् स

म्इडिभानिंदे हिन्छः

ज्यिभेनेरणश्रुणः स्वरम्भाषः इंग्री

लवंज्ञ इस्वस्वाण्ण व्यवस्था ये व्यवस्था ये व्यवस्था विध उरावस्थान्त्र जिन्धा विश्व या विश्व

इस्काःलक्षेत्रिकः मार्ड्य

नुउस्दूर्गनः कीएः पमर्थुउपम

विधयाकी इविडि

विभयान्यशिक्षेत्रविभयप्रिविध

साँड भाभनुभागासुँभग्रवप

म्राप्त्र हिंग पिर्वार्य में प्रहित के सिमिडि

विनीयर प्रममनगरवाग्नभा भिन्न हुन मार्स उचा दियुगान रणन रूप वर्ते येगस्ट प्रिकृति विनुभगण्डे हैं:

ग्वेविधवरण माभेग्य स्वर्ण मा स्वर्ण

नगरथमगित्रं वृद्धानिहिद्दर्भ

विषित्रभुगण्डेणः ॥

ग्रेडमिण्यमिन्भन्भि डिक्य्य विरुवेग सुर्थि। इह्ने विरुक्ति भाष्ट्रिक्ति भाष्ट्रिक्ति । भंभारकु ५५। डिउइरल्थन स्रेग ज्युमभ्यमभू कियम्बर् वकवार्या एनः अच्छारपार रगनः सम्बेशिक्षः रंगक्रभुनिरम द्भानः की रणः पमभुरेषषा रूप यकिपिलक्षित्व सम्भाग । इस्प्रमा इस्प्रमा इस्प्रमा अभाग व्याप । इस्प्रमा व्याप । इस्प्रम व्याप । इस्प्रम व्याप । इस्प्रम व्या भर्डिश्ने क ष भूभ भूने र ष भा विद्याशियभाग्य भने भार्वि

भम्हर्ति नेव मि विहे। विष्भा उउ मी हिन्यु विदेश भ्रम्भियानं स्वथायभ्यनं विद् पिउंविरमन्भरुकडे उङ्ग्रिथ क्षम्बमन्त्र केर्नभीभन्धिय यरीगह्चाग्वक क्लाइजुन्म रलभुभुभाज्यक्षार्यमा लङ्गीवयनं भर्भुयरामभूग प्रयाभित्र प्रमुख्य प्रमुख्य विष्ट उ च्रिय भाषियी ई धंग्डे

उउद्युष्ट्रप्रभग्यान्त्रभावे इभग्रम्यः भइत्याविक्रभग्रिवङ्गरीत्रकर्ने ५६४४वः उद्युष्ट्रस्याप्ये स्मिर्

समभवेरगहभुक्तिः इष्ट्रभू

स्वागियत्मभू ए भिभभः । इह्यम् व ज्ञान्त्व । ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व । ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व । ज्ञान्त्व व ज्ञान्य व ज्ञान्त्व व ज्ञान्य व ज्ञान्य व ज्ञान्त्व व ज्ञान्य व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान्त्व व ज्ञान

मंदवाद्विमा इप्तवयनभा

चुम् । । उद्युपा पुराष्ट्र य

नन्द्विनं विन भक्ष्मवन भाइलकवा विकारल अर्ड उद्यपि मभर्म भवन र वेहर मधि

#### भग्मनमः तुगाजी गाविज

सन्भिष्ठहरगन्म दिभेनम

र्वकिषिणिरं विशिव्या रहरहे नमृद्धनं भर्चे रेड्यानका प्रश्वन्य स्वका वसन्या भरे भरे सुचार हो ने हे

नगीरः धनायह्न कर्म चर्डिं कर्वा कर्वे कर्वे कर्वे कर्वे कर्वे विद्यमाणिगुष्ठ्य इर्ग्सर्ट्ड कर्मा कर्वे वे कर्वे कर्वे

**इं**श्युग्**ड**णक्षुभुःमे

उभाउरसम्बर्धाः भूज्ञस्वर्थः । इष्टम्बर्धाः

: Digitized By eGangotri

रसामुदिहिद्युणि य न अभ मु स माना उपाय्याविधारमञ्चारम् कंदिर्ण क्रम्भेरुकि अनं दिर्गदेश युक्तमार्यम् इभिन्धी डिक्वः भ डिसर् त'लेन भिद्रभग्रहरा

रक्तेरेठयभा उद्भवन्यभा म

चैनकद्रियानिः भेनेनम्यन्द्रययानि उद्गन्नयकद्रज्ञसन्। उि

ष्ट्रमन्द्रम् प्राप्ट भूगाईभा केवनगववतः।

म्यान्य निम्नाम न भाषन्य

विषयितः

गी त्रायेगकप्र हिस्ताययाभी

विद्यान भारतनः भन् भागमार्थ

नत्रत्यः मृयेभानाः भनि उद्घाम यभेवहाद दासुः

रङ्ग देश वंडेक सानीय भडिंद्

दे**उ पे हुभन भुरूत सुगुरुत्स्य भा** उभा मागबरा

अमङ्गवरम्मेद्वन भूगरभं वर्डा म्यिन्भूडि कर्ड डि

स्य क्रीवणाय उपित्र रेग स्वाधित स्वाध

प्रमार्थ्य क्षित्रे प्रभाव सुरुद्धम् । भाग क्षित्रे प्रभाव सुरुद्धम्

र भर्था दिसास स्विद्या सन विना

मोर्डे धोषुरारगवाक्तभा यद्दा इसवादिक मिश्रुपश्चिनाभमेश्रग

चेपागरंभनिष्यः भट्टः विलेखः ब्रद्धानि । अप्रति । अप्रति

मधनीयना यम्बियनेष्ठ केउनः भन्यभंभि विज्ञासन्तं भ हर्ष्य वर्ष केवर वर्ष ए भनः मुद्दिश्वराध्यान कि प्राप्त निक्षा के प्राप्त कि प्राप्त कि

भन्भप्रित्राभनित्रभनित्रभण्या अण्ण (अयाविधयाविध कित्तिन भूक्षेत्रभाष्ट्रभगभन्ने॥ वर्षाभगभद्रवास्मिन्यक्षेत्रभू सृत्र्थ

का भवत्र मुद्दा स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स

क्रुश्निष्ठे व पार पञ्च व भा क भवन भूकलभा प्रभी

मभेषुकवाञ्चभा भभाष्यग्रेष भरपञ्चवभ्रवभन्दरं प्रश्यभ अवश्वरं भरपञ्चवभ्रवभन्दरं भृष्ट्यभ अवश्वरं

भुगरः रबाभुभिचद्भगरं परंपर

परंचित्रपरंपरेधभा ० मीभग

नवुर्णनेय त्रुठभरभगन्धेक ष व्याद्यस्थित विद्याद्यस्थित । विद्यान्य स्थापित । नन्यगवद्दार्भभामेनद्राभणद्रायान नेनद्राद्धाः शहरद्राद्धाः अभित्र क्रमण्ड्यद्राद्धाः अहरद्राद्धाः अहरद्राद्धाः अवद्याद्धाः विश्वाद्धाः अहरद्राद्धाः अवद्याद्धाः विश्वाद्धाः अवद्याद्धाः अव

यपिष्ठेयस्पमः भपुमभूज

सवसने विभुद्धिश्रुलगुरम रिवस्तरक्षणस्यविक्वविभाण सुथमेविश्वभाभ भहेउसिरभने

वमने जिर्फ पूरणः भून रिभज

क्रिशिने विषेषिश्वद्वानभिष न ध्रा डि

लेन्ड्रइरिभानः ॥ जुडःजनमा

नकेवलं डीने यावस् भयाउना थाइमधी हा

धर्षण प्रामान स्प्राप्त

B

मुह्न

इन्ययपुर्भभेडेविभाषान्यज्ञ स

प्रकारिक्य अकरकार भाषा

भूभा निश्चित्रनः परभदभद्र भगक्षेत्रण्या स्वर्षेत्र नेरभक्षेत्रण्या स्वर्षेत्र

नित्तमु । भ्रामा गीमम् व मा भावा भी क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा के स्वा क्षा के क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा कि स्वा क्षा कि स्वा कि स्व कि स्व

इचियाः वेन पिवाइस्योभेगे शृङ्यभागकः समभेगीय

यसुद्धर कस्वी भनुउन्ह ए इन्द

## णिश्वरवयनभा इर्छकेन

इन्देन मेनुउया भनभा

विरंपियंगरित्यारिष्ट्र ह

त्र भंगतन मक

क्नमन्युमंघर्यालान् वि

मनिउक्भन्य गुरुष्य भव

इहि सुमिध्। पविस्ति

त्रभामाभडेयप्रिडमु मिध्रेम

रहे कि का कु दि इस

संनग्रभावित भेन पार मुझ

नरभः णिपड्भा

E 

Digitized By eGangotr

नयगिभिद्धी रभन द्वं वा बाह्य यथ्वित्रेः वियद्याग्याः भूभवः ० सम भनी भगज्य वाकामा हगव नुं भूरि नकाभय हुँ उत्पादम वराष, किञ्चन प्रश्तुरभाषुरं विषे सुगष्टकश्रृष्ट्रभवन इंदर कलीउ मुहेबरभार वज्ञाभा ममभेग्राक्ष्यां वः

नवाद्भवस्य क्षण्य मार्ग्य भित्रेण किम्प्रम् प्रिशित्रे व उद्धरमेव अभिक्ष अङ्गिति प्रविध्ये श्रित्र स्वर्धि मे का स्वर्धि वे राष्ट्री सिक्ष किस्प्रम् किस्प्रम् विश्व किस्प्रम् विश्व किस्प्रम्

उमुख्येष्ठेगारुवं

हेशुभधुर वेग्याप्रभिध्वा

ब्रह्म ने हु भिन का भवा भेज ब्रह्म का निक्का भेज (१६५);

नियम्भीना किंद्र

युन्द्रेब प्राथमा कभण

पियाः जुमज्जिभगन्थः

अच्चेर्वग्रहाः एक्ष

उभाउतिनडभाज

ने चुक्चक्रभा के चुराणा ने

क्यिव भेज समरण भूगा

र त्रविकति दियः

उस्व', चयङ्ग नहराउन्डेश्ड्रप्यभभेरे

म किर्नेश्य भरें जर्म

मुत्यभष्ट् उप्टथम् भूगोधाम् म<sup>श्रीकृष्ट</sup> नभरिक्षा उन्नियुक्तम क्रम्य क्षेत्र क्षेत्

रुग्धः ध्वभनाग्य वाहाभा

उभा रुण सर्गान विकाव र्ग स्थाने

ट्याश्चरम्य न्याद्य है क्ष्रि

रणव्यक्तिष्यग्रार्थिय यहक

नन्वभ्यिष्ठमवद्याद्यस्वन्त इद्यारियाक सुण्यहामाद्रम् भारत्य द्यारिया

Digitized By eGangotri

क्षिश्री सक्स बण्डम्भन्नम् भृष्ट्रिकेकेवः ज्

क्रिंग सुर्वेडरगाउं स्वाद्या विका मुबन्ज।

समेकारणनवाज्ञभावकविष्ट्र

इंदेइ द्यांग

अअन्दरगडः भियभृहज्ञ ह

उभा वृद्धिवक विकि इष्ट्रिंग प्रभाषा कि के विकित मार्ग

विकार्य भू भूया हा उपनिश्चित्र विकार्य सर्विष्ठ उपनिश्चित्र विकार्य सर्विष्ठ उपनिश्चित्र विकार्य

फुरिभिविष्यः॥

रानक वाजुआ



उज्ञमज्ञ सुद्य वि

केनइमुन्ल्फ्रिगाभवं विश्विष

रत्रभावी विश्विद्भवानं मानु

नंभनीनंग्यसभाद्गरः शुरीय हणवर्रम्मवात्र शिवस्य भंवेष्ट्रम्हण्य वृद्धारम् रावस्यम् विल्लोड

**भुक्तिभिर्देषेकः भुद्धः परिष्ठेवे** 

विभनप्रनिष्ठः उत्तम् मृत्यु

वग्डमुडिअल्यावन्दे दिर्भ

हरीर्वकिषनहिं

ये निनम्भरीक्रमें त्रुविभट्ट इंडेनेडि

**ॐनवेग्युज्ञेनक** जियेगनिये

गिनः बीभायपाग्रभन्मभूवि

म्बज्जेरें,हयं कविवाक्षा (४इस्डाड्रेंडर्लंडेन्बर्ड्ड)

विरिद्धिकग्वद्धतिणः दविवृद्धे प्रकाणकृष्यमंद्राहि द्वीदि क्रावद्ध्यमेवी क्रावद्ध्यम् हिन्द्रः क्रावद्धसम्मान्द्रिः धर्ममादि व्यावद्धसम्मान्द्

ठवंगीते स्पेडिभागात्री एडिसी क

जियुग्वले अपुर्वियम् अ

## मूलनेनिरुपणिरुविरमनभारकरे उर्मने

मेड्ड्रनगरबङ्गा यषाउँग्रेष्

न्म भ्रम उइम हम बहु निम्ह या भन्ने भें भ्रम न उप हव ने हम न मार के विद्या क

**युत्रिध्य** 

नेन,

याण्येडविभवादाणभ्युडेट्र

स्थ्रभन्यवाहामा यसादिक

**ब्रुगापानं रोक्निवभगनभा** 

विभाग्यनं विक्रः भनिधाभाइन

द्वान स्थान व अस्तावति इति व स्तावति इति स्तावति स्तावत

विक्रीकार क्रमभेमधन कुभा भारते अस्ति अस्त

39

जमेणिनः

रचिपलिडविडेन गमुद्धयाभुविङ्ग सुन्तिन र्राष्ट्रभ हणवन रुषभा सपुभू स्त्रु मनगर्भा हणवर् सर्वे भर्मे विकार दि म्यू में नेबार्नः ५, द्रश्ये निरणना कर्ष भानेगानगर विद्वधः करांनेता उ यहसाने रगवडे विमणीउभा नेर झुरू ने प्रिभाष श्र्यक भाष स्रीः ॰ मङ्गप्रवस्मनभा अने विश्विद्रविदुः

विभव्यभ्रतम् वभाग्यगाः वे यहिष्यम् स्वित्र भागः (६५ कि स्वित्र हिन्द हि

यस्भाष्ट्र उरिनकित 如型的到一 क मी: या है विश्व श्वर विश उन्रवसर् द मिरगनगके थिइ जिभा मध्भवृद्धवाहा इरामधेरम महरा दगवड्र एयं हव वृद्दिरंव भागभभ षीः भनिने भूरायञ्च सङ्गुरेर्पि विताह. विण्यभरी भपदः स्थापुरुभाग उभूभेर एगडे शिमेकी सं मुन्नि क षे प्रभित्रि ज्ञभग्कषभा विभाग्ने ज

मीडगवज्ञ उद्युवध्रि लब्ह्

येग्राप्त भ्रमनिक करानिकेः

मन्त्र वयाः भिक्षिभेरे विचाइकी

धिरभा ॥ एरिम्री विज्ञयुव

नावस्रं विरुपयितं नवर्गविष्यत् भर्ग्यहे उद्गवद्गवाद्वरत् भर्ग्यहे निरुपधिदेविरमनभारकः प्रभाननिष्ट्रा

क्रक्डीगड भभाष्ट्रभगनेन

ब्रेजनरं मुन्मकनः यत्रभष्ट्रक

नभक्षेत्रीभ

गवंडे येगिष्ट्याद्धपंक्रणं स करा मिन्द्रगतानेव सुर्यह्य प्रिष्टि च्ये विवर्गित वर्गित व मभव्याबक्त उरुवृक्षः भूभभी क्रुभं के रागाच्यु हुउँ विधा के रुइ'युप्रहिचिरण न्युग्नीवे उंभागेहनः म्राम्कवनं जित्र अस्त्रगडमः य युक्त यहिउ: अलिं णरुविचमगुलना दरयंत्रभ इस्रेड्स्डेभचपण्डकाजा ॥

李

उद्गर्धन भवर्थ किन्द्र हो जो

डिभग्डेलयुभग्ड्वडिनिम्नः उधु

त्रीज्ञ भारति वार भारतभवति छो

मुनाः चिद्विक्कभच्छा ।

समभन्द्रवाञ्चभा रवस्याप

यः भुनग्रवह्मग्रद्गाद्गाद्भा

माई बसें देशिकारियार है से हैं हैं

प्रकार उद्भाग कि गिर्म किलांड इंगार उद्भाग कि गिर्म किलांड

रुउवेरक्त्रेथते हुरूर्भ धन हमा

क्षच्यार इभाइभा

र्द्धीयइंडमय इभिडि हर्दः

एक प्रमेग्रीक विवाही प्रवाश भग्निभननंभडीयश्चिभ क्विकिम्भकीना भश्चिम क्ष्मदरः मगीरंगहिमक्रेप्रेस जगवडे हुइम्मनमुहः अपन्त किन्यु नानवभं भ्रकालभा ७ पृष क्ष्मित्र पथिदे विकामभाग्य हो नवमयुच्ये बाह्य यदाभम्

Digitized By eGangotri

उद्यंभवकर्द्धण प्रभंग थ्र अप्रभंग यत्र भंजरि क्येने रि

यरिमयइ जिथा सम्भिन्न विक भधी द्व य वर्ग

लेचीभिद्विरीएउटभीिदुउप

य्थीशः एकप्रमेकविवांत्र कथेनवामाभनभित्रियेवा

करेडियम इकले परम्पर के विकित्त है। देवा

रायाग्याँ उभभ प्रयेउग

उतिमीरिजियुर्ग्नेने प्रमंबे ०॰

मृषभाष्ट्राक्षित्र विष् सनभग्रहेर समभन्द्र वर्डी म्देरप्रभंदेरप्रम्त्रीप ब्रोक्सं यिन्द्रभाग ग्रंथलेबुद्धभनग्रमे पंगर्भ जमकुरं जमक्रम वसंप्रकृष्तिष्ट्युङ्गर्भणिय भाने प्रात्र्यानक्षिवाभूमें वे व नभुद्धके कि द्योगनग्रा ॥

O)

Digitized By eGangotri

Digitized By eGangotri

## अपिमी कित्रश्वानी एक प्रम विरामभा च्या इतिवेदनी

मुपि इ विकान भार कुँउ मी क प्राप्त में नि मारगङ्के न। ए विविधिराइ विभिक्के छित्रे उराभाउद्वेप्रियमुभानेभयाद् ह्रणयमकन्परेच भर्भभूद्राप वगर्न एफर्कभः । चिकित

अस्विष्ट क्रम्बिष्ट

क्रिन्द्र रिश्वनंगर्यो न्यरभे विवि

স্বস্থাই

णमसरु भट्टेर के उक्किन

मह भर भर हारी

अवद्गिषाः

गभभ्भद्रभःरुलभ्भुद्धाः

मह्या भहम्ब

थरभश्येभः उडिमी विजिर्द

वनि ०९ मृषेद्यंषेज्ञविदिक

मिकिके मिविष्ण एने हीन

नं रगवस्रालथ्वेस विस्थाल

र भिरुषिय्वियमभाष्ठे



विकासमेक्यक सामके भारित व्यीलभष्ट यन अनिकन मुद्दे द्विष्ठुग्रभ्राणिश्यान्त्रे

कुलावन्यभूजीमरायाना भ

चुर्त्र स्थाः मरलम्यद्धं गरे भूते। वक्ष्यं स्थानिक्षं स्वद्धं स्वदं स्वतं स्वदं स्वदं स्वतं स्वतं

रवंडे संपंभा भूका भग्ने अग्रेड भाषा

रचे पिउभी रूपम हाल हमर

थकः रुडीच भेड्रचव्यभा

उन योग मिक वे फिक विविद्य भाग्य जीन भी हगव्यूर ल पूर्वम एवमाल स्विध इंबाहिभवद्यापि इंधा मिहियेहा इड्डि प्रक्षित्र इंबाहिभवद्यापि इंधा मिहियेहा उर्हिन्नेक इत्तरिक अर्हाकाः सारीराभानभाषि हावेषांभेग द्वावर्ग अर्ह्माः सभानभः देशिकामुक्षेत्री

मानणनेद्विभम्य सङ्ग्रिमी हम्बर्द्धन वर्गा मस्वयने यहिनिन्धभगल्य मनेक्ष्ममूड विस्वविश्वभ पन्नीरमास्विष्द्विष्ठम्यः

ध्रुरवानं वज्भा

निग, इंकर्र

र मिविधाउने परिभ्रतक भे

व नज्ञवभिष म्बरानुर मरण्यम् के विमिधभूर ५

येनैवन्गर्हनभरं भूमाई विने पभद्रधरेषिवानिमः मुना इड्डिसिडिड जुले न डिडिइडिभिनुभी भभ्भभूज्यवङ्गा रामध् निजमा पिउनि-दिभिद्रन्ड मार्गन श्राग्य भमन् हिभ स्पेडिनेः उभाक्ष गवनं विद्य यः ध्रमः म्बर भश्रव उद्यः ।
उप्रथर विविविद्यमः प्रभा

भुग्विष्ठिउन्दर्भस्प्रभित्रमं

भथुमेषुकवाद्यभा कः पंछि

उभूरपरंमरलंगभी या फुज्ज वि विग्रेने पक्ष क्ष्म या गुजिया श्रेत्र स्टूडिंग

भचाना । इस्ति हरा है हिक् भा

इं रूप्त्रभू प्रम् प्रमिष्ट् प्रमिष्ट्

श्रुव । इति । इत्यानं प्र अवस्ति । अवस्ति । श्रुवे । देवका यभुनकाल कुर्वे ।

भंभवाभाषयम् भ्रमाष्ट्री

वन भगम्बा मारा भाईल कहा में उत्त निर्मा भाईल कहा में उत्त निर्मा भाव भाव मारा भाव किया निर्मा किया में किया निर्मा किया में किया निर्माण किया निर्माण किया में किया निर्माण क

नेदगडिण्ड्सांग्रेडेंहंकंग भारवस्त्र नामहरूः

रवानुमारलंब्राभ व ग्रक

दमेउद्भव बङ्गा उभर्य

ठवायनेम थष्टाभनाद्युर

उर्विच्या समर्थ भज्य

वञ्चा विश्वितवास्तिन उद्यं मरलं भ्रविमञ्जूरम्भभंजरि। क्रिरिश

Digitized By eGangotri

निवर्यमन् रि उअथभानेन उप्येत् विद्यावयः भिद्देनवुसंग्रिः कष्टिया स विकास अपरस्य द्वापान्य न् उसे विष्युम् स्था दिभाष उसे वेथक प्रयास कर उसे विष्युमी विषयि । विषयि स्था विषयि वार्डे।। विषयि । विषयि स्था वार्डे।। यर्भे रे सिंडे के सम्बन्धित क्नविधयाभागिवामा मुद्द्रश्रुविष्ठवभग्ने भुद्रयो

37

प्रेमेरे: भक्ष्कीरगारिश्वगरेह (धुमेदिइमेव भाउनंभुराग्वर्भ भितिष्धुर्यवर्शिश्चाभा नेष्ट्रग्वनम्भंमविन्धभ्भं हरेक्टरः वेकेमिद्रक्रुभम् परभुग्नइयेभट्ट डिंइयेनी हा वस्तुवरुभिड्येइ'वाभराभु शहारम्भदभन् वृहिवर्षेष्ट

किभिज्ञर्द्वभव्दज्ञरणन्ध्रभद् विगिन्थ्य स्थाप कि विश् : भरणः किभुग्नानाः कियो यथा कि गुण्य श्रिम् स्वाम प्र उला भिके उपीयरेभ ज्य वर्ष यह यह यह यह विश्व कि उउपननी उर्ग्रिवउधेव ४५क रिररर्द्धानिभानाभया ।

मुरपी एउभारे भे जिलाप ने हुन छि है यस्वै इस्ति भिष्टे भुग्यम् न वृश् भेथने भद्यक्रमस्य भक्तम् गुलिउमके ज्यूलमुन्नथग्र् रीयायं अभग्नल वाग्लशंभदेग भिर्विण प्रिमित्ति रित्रियु वनी भिद्यभिष्ठ का निभान्य यथ क्रश्रभुगिवश्रमिश्रम्बनीयुर

भक्त थय दिउद्वा निभान्न या भक्तनेत्व गरा १ इडिमी भर्षेड्रभगराण्युर्व यहणभक्रमावित्रभेनीनिर्व वेक्ष्रुगम्जभवभविश्वभगग्र विरुषं मीरगरर्भात्रनात्र मीरगगर जिर्देश विल्ला रचेममं विश्वानभा ०३

यभुक्ष भिरुतिक्षु हित्र रङ्गावनी मुहा भद्रभयि उद्घारिक मान्या भक्र ने साम हो।।

2000 2000



